

ذکر اللہ
قرآن کی روشنی میں

لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ



میکھو لاء

کُورْآن کی شائنی مے

(سंकलन)

डो. सैयद अशरफ यदुल्लाही

कौमे महेदविया की अज़ीम व बुवंद शप्शीयत्

आइताजे कौम

मौल्पी नजमुदीन साहज

यदुल्लाही (महुम)

के नाम उन के इने हिके - इस्म क

साया जयपन में मुळ पर छाया रहा.

उनका कौल था के

‘इस्लाम महेदवियत के अगैर

नामुक़ म्मल है’.

अरबी अल्फ़ाज़ के सही तलक़्क़ुज़ के लिये दी गई निशानियां

अ ع

ج ح

س ف

ز

ك ق

م ن

ت ط

و ض

ذ

दीर्घाया

अणु

रहनुमाअे मिल्सत, मुकस्सिरे कुर्आन, साहणे तफसीरुल्महेमूह
की तनखुलुमा'बूह मौलाना उजरत सैयह महमूह साहण अकेलवी
मौलवी इजिल, नागपूर युनिवर्सिटी, अहले डेद्राभाह

बिराहरम, मौलाना मौलवी उजरत सैयह रवशनमियां साहण, यदुल्लाही, शूह.
ईरुद्ध, अहले उलोई, गुजरात, इकने मजलसे उल. माअे महदविया छिन्ट, छिन्टो-
पाक की अेक जानी पडेयानी शप्सीयत है. उजरत मौलाना मवसूफ के इरुद्ध उकटर
जनाभ सैयह अशरफ साहण, यदुल्लाही, शूह. ईल्मुद्धुको, ईल्मी जौको शौक मौलाना
मवसूफ की सोडभत, ईताअत और कुरभत से इासिल हुवा, उकटर साहण को
बयपनही से ईल्मी मुतालिआ तेहकीको तदकीक का शौक रहा है.

देषने में यही आता है के जबली ये सालेल नवजवान डॉ. सैयह अशरफ यदुल्लाही,
उलमाअे दीने मतीन से मुलाकात करते हैं, अपने ईल्म की तिशगी को दूर करने की
कोशिश करते हैं. इनकी बात बोहत ही पुर मज़ (ठोस) और ईल्मी मौजूआत पर
मुड़ीत रहेती है और मज़हबे इक्का के मुफ्त-लिफ मज़ामीन (विषय) पर बेथकान
लिपने और कहेने की सलाहियत ली रहते हैं. गुजरात के बाशिंटे छोने के भावजूह
उर्दु लुभान के अेक बेहतरीन हरदिल अजीज़ मुक़र्रिर ली है.

ईन्डोंने अपनी जाती सलाहियतों और तेहकीकात का मुज़ाहेरा अपनी तालीफ
'जिकुल्लाह कुर्आन की रौशनी में' में किया है, इससे उनके जोरे इलम और
सलाहियतों का पता चलता है. किताब जिकुल्लाह कुर्आन की रौशनी में के अहमतरीन
तीन इन्वानात हैं (१) सुभूते महेदी और इराईजे विलायते मुहंमदिया के बयान में
(२) जिकुल्लाह कुर्आन की रौशनी में (३) जिकुल्लाह 'ईन्साफनामे' के उवाले से.
और इन अहम् अब्वाब के जैली अब्वाब ईस तरतीब से हैं, जिकेकसीर, जिके
दवाम का हुकम, जिकुल्लाह के मप्सूस अवकात, जिकुल्लाह के इवाईह. इन अहम्
इन्वानात पर ईन्डोंने सैर इासिल बहस की है.

उकटर जनाभ सैयह अशरफसाहण यदुल्लाही ने मौजूहा दौर की लादीनियत और
मज़हब-बेजारी से बयाने के लिये वक्त की अेक अहम लुजरत को पूरा किया है.

अल्लाह तआला से हुआ है के मुअल्लिफ को जज्जअे जैर अता इर्माअे और इौम के
नौजवानों को ईस किताब को समज़कर पढने और उस पर अमल करने की तौफिक
अता इर्माये.

- सैयह महमूह 'अकेलवी'

तकरीज और दुआएया कलिमात

अब

पीरोमुशीह, मौलाना मौलवी उजरत सैयद रवशनमियां साहब, यदुल्लाही
सफ़ाहा दायरअे महेदविया पांजशीगरवाड, उल्मोई.

इम्हो तस्बीह, जिंके जमालो कमाल के लायक जाते तक्दूस-सिफ़ात पुदाअे
करीम है. उसने जिंके लिये ईन्सान को जुबानो दिल अता किये. सांसो के
जरीये खंडगी को बंदगी की पाकी अताकी. जिंकुल्लाह की नेअमत बज्शी.
अपने जिंकेसे शुको अेइसानमंदी पेश करने का हुकम दिया.

और इर्माया

या अैयुल्लजीन आमनुकुरुल्लाह जिंकु कसीरा

और इर्माया

इज्जुनी अज्जुम वशकुली वला तक्कूरुन

लाओ दुइदो सलाम रसूलो महेदी पर, उनके वसीलेसे हमें जिंकुल्लाह का
तरीक़ा मिला - पुदाअेतआलासे हमारे नबी स.अ. को तालीमो-माहियते
'जिंकुल्लाह' पछोयी याने 'जिंके. ज़ई की तालीम' और आपने ये जिंके
ज़ई की तालीम को बारे अमानत के तौर पर ह. भिज़र अ.स. को सौंपकर
ये तालीमे इहानी, तरीक़अे जिंके ज़ई, महेदीअे मवउद मुरादुल्लाह के
सिपुई करने का हुकम दिया. ह. भिज़र अ.स. ने ये अमानत शेख़ दानियाल
भिज़री की हाज़िरी में जौनपूर की जोभरी मस्जिदमें मेहदी अ.स. को
पछोया कर मेहदी अ.स.की तस्दीक़ की उनसे बैत की और जिंके ज़ई की
तालीम ली हासिल की और वही जिंकुल्लाह की तालीम मेहदी अ.स.से
अस्हाबे महेदी, ताबईन, तब-ताबईन से डोती हुई हम तक पछोयी.

मेरे इरज्जे अर्जुमंद तुल्उमुदू, सैयद अशरफ़ सल्ल.म.लू ने अपनी तालीक़
जिंकुल्लाह कुर्आन की रौशनीमें, अल्लाह के इर्मान, इदीसे नबी (स.अ.)
और ईमामुना मेहदी (अ.स.) की नकले शरीफ़ पेश करते हुवे पुरजोर
दलीलों के साथ अपने पास अंदाज में, आम इहम तरीक़े से, जिंकुल्लाह
के हर पहेलु को समजाया है. जो लोग ठंडे दिलसे सोचते और गौरौक़िक
करते हैं, उनके लिये जिंकुल्लाह की अहमीयतो इर्ज़ायत को समजने के लिये
ये अेक मुईद किताब साबित होगी. जिसे पढकर आम आदमी ली समज
सकता है के जिंकुल्लाह इर्ज़ है तो क्युं इर्ज़ है, उसके पास वक्त

क्या है ? उसका तरीका क्या है ? और पाबंदी से जिक्रुल्लाह किया जाय तो क्या क्या ने'मते अल्लाह अता इर्मायेगा और अगर गड़बड़ की जाये तो ग़ाइल हुन्याओ आभिरत में किस अंजाम को पढोयेगा.

ज़ाहिर है के ये सब कुर्आन, अह्लादीस और तफ़सीर की रीशनी में बयान किया गया है, इसलिये किसी भी 'मोमिने सादिक' के लिये ये किताब अेक ऐसे बिरागे सिदायत और मशूअले-नूर का काम करेगी, जिससे वह सिराते मुस्तकीम पर आसानी से चल सकते है.

इस तरह जो इन बातों से वाकिफ़ नहीं है उन लोगोंको ये किताब बहुत फ़ायदा पढोयानेवाली ओर जो वाकिफ़ है उनके लिये हीसला बढानेवाली साबित होगी. मेरा यकीन है के इस किताब को पढकर किसीभी पुढाकेबंदे का शौक और दिली लगाव जिक्रुल्लाह के तरफ़ हो सकता है और वो इस रास्ते पर अमलन् चलने की कोशिश करे तो इर्माने इमाम मेहदी (अ.स.)

“युप युप करो साथ मूय हो जाय”

और

“रास्ते का चलनेवाला पढोयनेवाले के बराबर है”

के मुताबिक़ जिक्रुल्लाह करने वाले आकिर का शुमार मोमिनो में हो सकता है, अगर इज़ले पुढावंदी हो जाय तो वो पुढा के ईरफ़ानो पढेयान के रास्ते पर दरज़ा ब दरज़ा तरक़की करता हुवा आसानीसे कुर्बे ईलाही भी हासिल करने में काम्याब हो सकता है, पुढा की जात को हासिल कर सकता है, जिसे ईरफ़ाने ईलाही, मारेफ़ते पुढा कहते है. इर्माने मेहदी मवउद (अ.स.) है

मोमिन वो है जो पुढाको टेभे, सरकी आंभसे या दिल की आंभसे,
या प्वाभमें, या इस सिफ़त की सख़ी तलब रખ्ने

इमामुना (अ.स.) ने पुढा के हुकम से तलबे दीदारे पुढा इर्ज़ की. तलब पैदा करने के लिये जिक्रुल्लाह बहुत ज़रूरी है, जो नस्से कुर्आन से साबितो इर्ज़ है, जिक़से सख़ी तलबे दीदार बढती है, जिक़ करने से नूरेइमान इहो-दिलमें पैदा होगा.

इर्माने मेहदी अ.स. है

कुर्आन को समजने के लिये नूरे इमान बस काफ़ी है

કુર્આનભીનૂર

या अथ्युलन्नासु कदन्नअ.कुम भुरलानुम् भिररब्बिकुम
व अन्जलना ईलैकुम नूरम् मुबीना (१७५) सू निसा

એ લોગો યકીનન્ તુમ્હારે પાસ તુમ્હારે પરવરદિગાર કી તરફ સે એક દલીલ (મુહંમદ સ.અ. કી જાતે મુબારક) આ ચૂકી હૈ ઓર હમને તુમ્હારે પાસ એક નૂરેમુબીન (કુર્આન) ભેજા હૈ

જાતેખુદાભીનૂર

अल्लाहु नूरस्समावाति वल्अरज़... आ. (उ५) सू नूर

अल्लाह तआला आसमानों और ज़मीन का नूर है

જબ કુર્આન કો સમજને કે લિયે નૂરે ઈમાન કાફી હૈ તો જાતે ખુદાકી પહેચાન કે લિયે ભી નૂરે ઈમાન કાફી હોગા, બલકે બેહદ ઝુરૂરી ઓર ફર્માને મહેદી ઓર આયાતે કુર્આની સે સાબિત હુવા કે જાતે ખુદાકી પહેચાન કે લિયે નૂરે ઈમાન ઝુરૂરી હૈ ઓર ઝિકુલ્લાહ સે નૂરેઈમાન પૈદા હોતા હૈ. માલુમ હુવાકે ઝિકકે બગૈર સબકુછ લાહાસિલ હૈ. ઝિકુલ્લાહ સે નૂરે ઈમાન પૈદા હોતા હૈ, ઝિકુલ્લાહ સે બંદે ઓર રબમે જો પર્દા હાઈલ હૈ વો હટ જાતા હૈ, ઝિકસે બંદા અપની નફી કરે તો ફનાઓ બકા કે જલ્વે નઝર આયેંગે. જબ બંદએ મોમીન ઝિકસે અપની જાત કી નફી કરતા હૈ તો ઉસકી મિસાલ આમ ફહમ અંદાઝ મેં એસી હૈ કે.....

भीटा दे आपनी उस्ती को अगर कुछ मर्तबा याहे
के दानाप्पाक मे मिलकर गुलोगुलजार होता है.

ઓર બંદે કા અપની જાત કી નફી કરના ફના નહીં બલકે જિંદએ જાવીદ હોના હૈ . યે ખાકી ઉન્સુર કા નૂરન અલાનૂર હોના હૈ. ઝિકુલ્લાહ સે ફના કા રાસ્તા મિલતા હૈ ઓર બકા કા રાસ્તા ખુલતા હૈ, ઝિકુલ્લાહ નહીં, તલબે દીદાર નહીં. તો ફિર બગૈર તલબ કે દીદાર કહાં ? અપને નફસો જાત કો છોડો તો ખુદા પાઓ - ખુદા દેખો, અપની તલબ જૈસી ઓર જિસ દર્જેકી હોગી, ઉસકી શાન હર આન નિરાલી નઝર આયેગી સરકી આંખસે, દિલકી આંખસે યા ખ્વાબમે.

ઝિક મેં કલ્મએ તૈયબ સે ઝાકિર અપને કો, અપની રૂહોદિલકો પાક કરતા હૈ. 'લાઈલાહા' કે મુકામે ગુફતની કો છોડકર ચશીદની દીદની ઓર ઉસસે

ભી આગે બઠ કર 'લાઈલાલા' શુદની કે દર્જે કો પાકર 'ઈલાહ' હો જાતા હૈ, તબ અન્વારો તજલ્લી કી બારિશ હોતી હૈ ઓર બંદા દીદારે ઈલાહી - કુર્બે ઈલાહી સે ફૈજયાબ હોતા હૈ.

ફર્માને મહેદી 'મોમિન વહ હૈ જો ખુદા કો દેખે' પર કુર્આન સાદિક હૈ -

ફર્માને ઈલાહી હૈ

મનકાન. ફી હાઝિહી આ'અમા ફહુવ-ફિલ્આખિરતિ આ'મા વ
અઝ્.લુસબીલા (૭૨) સૂ.બની ઈસરાઈલ

યહાં કા અંધા વહાંકા અંધા હૈ ઓર રાસ્તે કા ભટકા હુવા હૈ

ઓર સૂ. અન્આમ, આ - ૧૦૫ મેં ઈશદિ ખુદાવન્દી હૈ
કદ જાઅ.કુમ બસાઈરૂ મિર્રખ્બિકુમ, ફમન્ અબ્સ.ર. ફલિનફ્સિહી
વમન્ અ.મિય. ફ.અલૈહા.

બિલાશુબા તુમ્હારે રબ કી તરફ સે (હકકો-ખુદાકો) દેખને કે તરીકે આ
ચૂકે હૈં પસ જો શખ્સ (ખુદાકો) દેખલેગા વો અપના ફાયદા કરેગા ઓર
જો અંધા રહેગા વો અપના નુકશાન કરેગા.

ઓર આં હઝરતને ભી ફર્માયા હૈ, હદીસે શરીફ હૈં
મન્ રઆની ફકદ્ રાઅ.લ્ હકક

જિસ્ને મુઝે દેખા ઉસને ખુદા કો દેખા

હ. મુહંમદ નબી સ.અ.કે. લિબાસમેં નૂરે ખુદા આગયા, કુર્આન કે રૂપ મેં
બસીરત કી રૌશનીયાં આગઈ, ઈમામ મેહદી મવઉદ અ.સ. બસીરત બાંટતે
હુવે, દીદાર દિખાતે હુવે આએ જૈસાકે ફર્માયા.....

'આવ, બંદેકા દામન પકડો ઓર ખુદાએ તઆલા કો દેખો'

.... અબ બસીરતે ઈલાહી કી આમ દાવત પહોંચ જાને કે બાવજુદ અગર
કોઈ ચશ્મો દિલકા અંધા (કલ્અન્આમો મુગ્ફલ) અફલો દિલસે બસીરત
હાસિલ ન કરે, દિલ કી આંખ બંદ રખ્ખે ઓર અંધા બના રહે તો વો ઉસકી
અપની ગુમરહી 'અઝ્લુ સબીલા' કી જિહાલતો ઝલાલત હૈ ઓર હર
ઝલાલત કા ઠિકાના જહન્નમ હૈ. ખુદા ને અપને નબી આંહઝરત સ.અ.
સે ફર્માયા કેહદો ઐ નબી સ.અ. કે મૈં તુમ્હારા પાસબાન નહીં હું 'વમા
અના અલૈકુમ બિહફીઝ' (સૂ.અન્આમ, આ. ૧૦૫) દેખો તુમ્હારે પાસ,

तुम्हारे रबकी तरफसे (पुढाकी) बसीरत की रीशनीयां आ गई हैं, अब जो भीनाई से काम लेगा (उड़ को देख लेगा) अपना ही लला करेगा और जो अंधा बनेगा पुढ नुकसान उठायेगा, मैं तुम्हारा पासवान नहीं हूँ. इस आयत की तफसील तो तफसीर ये है के मेरा काम बस ईत्नाही है के बसीरत की रीशनी को तुम्हारे सामने पेश कर दू. उसके बाद आंखें जोलकर देखना या न देखना तुम्हारा अपना काम है, मेरे सिपुई ये जिदमत नहीं की गई है के जिन्होंने पुढ आंखें बंध कर रखी हैं उनकी आंखें जबरदस्ती जोलें और जो कुछ वो नहीं देखते वो उनकी दिखलाकर ही छोड़ू.

महेदी अ.स. ने इर्माया

मोमिन वो हैं जो पुढाको देखे

और तलबे दिहारे पुढा को कुर्आन की इसे इर्ज इर्माया और कडा के

मा मजलबे बसीरां आवुर्दाईम

इम देखने वालों का मजलब (रास्ता) लाये हैं

और जिंदगी भर डिजरेत करते हुवे आम इन्सानों को उमूमन और उम्मते मुहंमदिया को भुसूसन अल्लाह की बसीरत पर बुलाते रहे और अल्लाह के उस इर्मान की ईत्तेबा करते रहे जो सू.युसुफ (१२) की. आ. १०८ मे युं बयान हुवा है....

कुल छाजिही सभीली, अद्गी ईलल्लाही अला बसीरतिन् अना
वमनित् त.ब.अ.नी.

सूरअे युसुफ में दावते बसीरत (दीदार) का हुक्म दिया गया

औ नबी आप केह दीजिये के ये मेरा रास्ता है,

बुलाता हूँ (लोगों को) अल्लाह की तरफ उसकी बसीरत (दीदार)

पर मैं और मेरा ताबअे ताम (याने मेहदी).

ईस्लाम की तारीफ गवाह है के रसूल स.अ.के ताबअे ताम होने का दावा नबी स.अ.के बाद सिवाय भलीकृतुल्लाह आभिइरुफ्फमां ईमामुना महेदी अ.स. के किसीनेभी नहीं किया. आप ईसीबात के लिये मजूस हुवे थे और दावा भी आप का यही था. जैसा के इर्माया 'अंदा इदम भर इदमे रसूलअस्त'. इदमे रसूल पर मेरा इदम है. जो ईस इदीस के मुंवाइफ़ है

अल्मेहदी मिन्नी यक्कु अस.री वला युप्ती

महेदी मुज से हैं मेरे नकशे इदम पर यलेगा पता नही करेगा

આજ કે ઈસ ઇન્હિતાત કે આખરી જમાને મેં લોગ મઝહબ સે, દીન કે રાસ્તે સે ઓર અમલસે દૂર હોતે જા રહે હેં. એસે વક્ત યે કિતાબ, આમ લોગો કો, ખુસૂસન મહેદવિયોકો દીન સે કરીબ આને ઓર વિલાયતે મુહંમદિયા કે એક અહમ ફર્જ 'ઝિકે દવામ' પર અમલ કરને મેં ઓર ઝિકુલ્લાહ કો કાયમ કરને ઓર બા મોહબ્બત અમલ કી તૌફીક દેને મેં કાર આમદ હોગી.

અગર કોઈ તાલિબે સાદિક, ઈસ કિતાબ કો ગૌરો ફિક સે પઢે ઓર (ઉસપર) અમલ કરે તો ઉસે યાહિયે કે (પહેલે) અમને રેહબરે સાદિક સે રૂહાની તાલીમો તજકિયા, મુશાહિદા વગૈરા સીબે ઓર પૂછે - ક્યું કે કુર્આન કહેતા હૈ કે...

વસ્અ.લુ અહલિઝ્ ઝિક્રિ, ઇન્કુતુમ લાતાલમૂન
અગર તુમ નહી જાનતે હો તો એહલે ઝિકસે પૂછો

જો ઝાકિર હો ઉસ્કો પૂછો સહી રાસ્તા નૂરે ઈમાન કે વસીલેસે અહલિઝ્ઝિક બતા સકતે હૈ. ક્યોંકે ઝિકુલ્લાહ સે દિલો નિગાહમેં નૂરેઈમાન પૈદા હોતા હૈ. તાલિબે હક રેહબરે સાદિક સે પૂછે કે 'લાઈલાહાઈલ્લલ્લાહ' કલ્મએ તૈયબમેં (કે જો અફઝલુઝ ઝિક હૈ) અસરારે ઈલાહી કી તાલીમો તરબિયત કે ક્યા ક્યા રાજો ન્યાજ પોશીદા હૈ. ઈન્શાઅલ્લાહ સચ્ચી તલબ, તજકિયા ઓર હર કિસ્મકી તદારત હોગી તો ઝાકિર બહુસ્નોજમાલ કમાલ કો પહોંચ સકતા હૈ, ફઝલે ખુદાવંદી ઓર ફયઝાને રસૂલોમેહદી સે અનૂકરીબ મકસૂદ કો પહોંચ સકતા હૈ. ઝાકિર કે લિયે કુછ હિદાયતે, કુછ પરહેઝ સુરૂરી હૈ, પાક રોજી હાસિલ કરે, ઉસ રિજકે હલાલ કો હલાલે તૈયબ બનાયે યાને પૂરા ઉશ્ર નિકાલે, તો ઝિક કાયમ હોગા.

'અશરફુસ્સુલુક' ૧૩૦૩ હિ. મે. લિખી હુઈ કલ્મી કિતાબ તાલીમાતે ઈમામુના મેં હૈ. ઉસ્મેં લિખતે હુવે હિદાયત કી ગઈ હૈ કે એ બરખુરદાર યે બયાને તાલિમેઝિક, અલ્લાહ કે વાસ્તે, મુબ્તદી કે લિયે હૈ - મગર વો મુબ્તદી તાલિબે સાદિક હો ઓર મુર્શિદ સે હુકમો હિદાયત લેકર અમલ કરેગા તો ઈન્શાઅલ્લાહ મકસૂદ કો પહોંચ સકતા હૈ, મુર્શિદકી ઈજાજત કે બગૈર, ઓર શરાઈત કો પૂરા કિયે બગૈર તાસીરો ફાયદા ન હોગા. અગર તાલિબે સાદિક ખુદાકી મહોબ્બતો દીદાર કે શૌક સે અમલ કરેતો ચંદ રોજ કે અરસેમે મુરાદ કો પહૂંચેગા. બગૈર અમલ કે કુછ હાસિલ નહીં હોગા. ઓર વો આગે લિખતે હેં કે.....

- કમખાએ - ભૂખકો અપને ઈખ્તેયાર મેં રખ્ખે
- કમ સોએ - નીદ કો અપને ઈખ્તેયાર મેં રખ્ખે
- કમ બાત કરે - જુબાનકો અપને ઈખ્તેયાર મેં રખ્ખે
- આમ લોગો કી સોહબત સે પરહેજ રખ્ખે ઓર ગોશાગીર રહે

ઓર લિખતે હેં કે ઝાકિર કે લિયે પાંચ તહારત જુરૂરી હે.

- (૧) તહારતે ચશ્મ : આંખો કો ગયરિયત કે દેખને સે પરહેજ
- (૨) તહારતે કાન : કાન કો માસિવા (માસિવલ્લાહ) કે સુનનેસે બચાએ
- (૩) તહારતે જુબાન : દુન્યવી બાતચીત ઓર જૂટ સે પરહેજ
- (૪) તહારતે હલક : લુકમએ શુબા ઓર હરામ સે બચાએ.
- (૫) તહારત સોહબતે બદકી : યાને ફાસિકોં કી સોહબત સે બચે ક્યોંકે જૈસી સોહબતમેં રહેગા વૈસી તાસીર પૈદા હોગી.

અલ્લાહ સે દુઆ હેં કે મોમિનીન મુસદીક ભાઈ રસૂલો મેહદી કે વસીલે સે ખુદા કે ફજલ સે ઝિકુલ્લાહ કે ફર્જ કો, દીદારે ઈલાહી કે હુસૂલો વિસાલે ખુદાવન્દી કા ઝરીઆ-વસીલા બનાએ ઓર અજ્જ ડૉ. સૈયદ અશરફમિયાં, ફરજંદે સઆદતમંદ કો ઉમ્રો ઈફબાલ, સેહતોજમાલ, ઈમાન બકમાલ, ઈલ્મો તરક્કી બ કમાલ અતા કરે. ફયજાને ઝિકુલ્લાહ બકમાલો-બેમિસાલ, મેહદીકે વસીલે સે પેશકિયા ઉસકા ને'મુલબદલ ઉન્હેં ઈમાને કામિલ અતા કરે, વસીલએરસૂલોમહદીસે ખુદા અપના ફજલો કરમ બકમાલ અતા કરે ઓર ઉનકી ફેહમો-જકા કો કમાલપર પહોંચાકર તલબે ઈરફાને ઈલાહી બકમાલ અતા કરે.

આમીન.....

- સૈયદ રોશનમિયાં મુનોવરમિયાં 'યહુલ્લાહી'

૧૫, શાબાન, ૧૪૧૬ હી.

મુતાબિક ૭, જાનુવરી, ૧૯૯૬

ડભોઈ

अनुक्रमणिका

उत्खान

पेज नंबर

पेशलकर

१) सुबूतेमडेदी और इराईले विलायते मुहंमदिया
के बयान में १

२) जिक्कुल्लाह कुर्आन की रौशनी में १७

१) जिंक का हुकम १८

२) जिंके कसीर का हुकम २०

३) जिंक का तरीका २३

४) जिंक के अवकात २५

५) जिंक के फायदे २८

६) जिंक से गइलत भरतने का अंजाम ३८

३) जिक्कुल्लाह 'ईन्साइनामा' के उवाले से ४२

પેશ લક્ષ્ણ

સબસે પહલે મૈ અલ્લાહતઆલા કા શુક અદા કરતા હું કે ઉસને અપને ફઝલો કરમ સે મુઝે યે તૌફિક વ તાકત અતા ફર્માઈ કે મૈ આજ કે જદીદ કામ્પ્યુટર ટેકનીક્સ કી મદદ સે ગુજરાતી ઔર અરબી દોનો જુબાનોં પર મુશ્તમીલ 'ઝિકુલ્લાહ' પર મબની એક ઐસી કિતાબ કી ઈશાઅત કર સકા જીસકી મદદ સે ઉર્દુ સે કમ આશના હમારે ગુજરાતી મોમીનબાઈ ઈસ્તફાદા ઉઠા સકેંગે ઔર ઝિકુલ્લાહ કે મુતાલ્લિક ઈન કુર્આની આયતોં કો પઠ કર ઉન્કા યકીન ઔર મુસ્તહકમ હો જાયેગા જીસકી બદૌલત ઉનકા જૌકો શૌક ફરાઈઝે વિલાયતે મુહંમદિયા' કે એક અહમ ફર્ઝ ઝિકે દવામ કી તરફ ઔર માઈલ હોગા ઔર અગર અલ્લાહ ને ચાહા તો વહ ઉસપર પાબંદી સે અમલ પૈરા હો કર અલ્લાહતઆલા કી ઉસ નાયાબ વ બેમિસ્લ નેઅમત સે સરફરાજ હોનેકે કાબિલ હો સકેંગે જીસકી 'તલબ' મહેદી મવઉદ ને મોમીનોં પર ફર્ઝ ફર્માઈ યાને દિદારે ખુદા' માનિંદે કૌલુલ્લાહીતઆલા (વલ્લઝીન જાહદૂ ફીના લનહ્ દિયન્નહુમ સુબૂલના) જોલોગ હમારે રાસ્તે મૈ જદો જહદ કરતે હૈં ઉન્હેં હમ રાસ્તે ફરાહમ કર દેતે હૈં.

કિસી ગુજરાતી ફિલોસોફર ને કહા હૈ....

પહેલાં એક વિચાર હોય છે

તેમાંથી પેદા થાય છે ચળવળ

ચળવળ માં થી સર્જાય છે વ્યવસ્થા

વ્યવસ્થા માં થી બને છે સંસ્થા અને

એ સંસ્થા ના પાયા માં જ વિચાર નું મૃત્યુ રહેલું હોય છે. ઈસિલિયે મૈને યે કિતાબ છપવાને કેલિયે કિસી ઈદારે કા સહારા નહીં લિયા. મગર મૈ ચાહતા હું કે તર્કે દુન્યા, સોહબતે

સાદિકાં, તલબે દિદારે ખુદા વગૈરહ બકયા ફરાઈજે વિલાયતે મુહંમદિયા જીસે મહેદી અ.સ. ને આકર અપને માનને વાલો પર ફર્ક કિયે હૈ ઉનકી ઈશાઅત ભી ગુજરાતી જુબાન મેં ઈસી તરહ કરું. લિહાજા મેં ઈસ કારે સવાબ મે આપકો ભી બનફસે નફીસ શરીક હોનેકી દાવત દેતે હુવે ગુજારીશ કરુંગા કે આપ મેં સે જો હઝરાત ઈસ કાબિલ હોં કે વહ મેરી કિસ્મી ભી તરહ સે મદદ કર સકેં તો કુરૂર હી કરેં. યાને ઝહની સલાહિયત રખે વાલે અપને જરીન મશવરોં સે નવાજેં ઓર માલી ઈસ્તેતાઅત રખનેવાલે માલી ઈમદાદ સે મદદ ફર્માયેં. ક્યોં કે ઈસ કામ કે લિયે આપકે મુફીદ મશવરોં કે સાથ એક માફુલ રકમ કી ભી કુરૂરત હોગી. મુજે ઉમીદ હૈ કે ઈસ સવાબે જારીયા મેં આપ ભી હિસ્સેદાર બનેંગે ઓર મુજે ભી મમ્નુન્ ફર્માયેંગે તાકે આઈદા ભી ભી મુઝ મેં ઈસ કિસ્મ કે કામ કરને કા હૌસલા પૈદા હો જીસસે તમામ કૌમે મહેદવીયા કે અફરાદ મુસ્તફીદ હોં. સાથ હી મેરી યે ભી ખ્વાહિશ હૈ કિ આપ હઝરાત ઈસ સિલસિલે મેં કોઈ તરમીમ યા તજવીઝ પેશ કરના ચાહતે હોં તો મુઝ સે ખતોકિતાબત કરેં.

ફક્ત

ડૉ. સૈયદ અશરફ યદુલ્લાહી

બિન

હ. સૈયદ રૌશનમિયાં સાહબ યદુ-
લ્લાહી

કુબેર નગર, બોડેલી, જી. વડોદરા

ફોન. ૦૨૬૬૫/૨૦૭૨૪

① सुभूते महेदी और इराधजे

विलायते मुहंमदिया के बयान मे.

तारीजे इस्लाममे जतने दावेदारों ने महेदी होने का दावा किया था उन सबमें जातिमे विलायते मुहंमदिया, जलीकतुल्लाह, इमामुना उजरत मीरां सैयद मुहंमद जौनपुरी (अ.स.) ही वाहिए और सच्चे महेदी थे, जिसका वादा अल्लाह और रसूल स.अ.ने किया था

तारीज इस बातकी शहादत देगी के नवीं सदी हिजरी के अवाधल तक आल-मे इस्लामीका कोई मुल्क ऐसा नथा जहां रूसूम, आदात और बिदआत जुजवे दीन न बनगये लों, उरजगा सूफीया के बिदआत उल्मा की ज़ाहिर परस्ती और अवाम के इंसिद अकाधद का दौर दौराथा जैसे वक्त में १४ वी जमादि उलूअवल ८४७ हि.नवीं सदी के निस्फ में पीर के दिन उ.जलीकतुर्रहमान महेदी मवउद मीरां सैयद मुहंमद स.अ. की विलादते बा सआदत जवनपूर में हुध.

आपकी दावते महेदीयत की मुदत (२३) साल है. इस मुदत में (१८) साल दावते गैर मुअक्कदा रहा और पाँच साल दावते मुअक्कदा.

आपकी रेहलत ८१० ही. में इलाकअे पुरासान. 'इराह' में हुध. आपकी रेहलत शरीफ की तारीज 'महेदी मवउद आमद व रइत' से ८१० ही. से निकली है.

आप (अ.स.) ने दावा किया के आपको अल्लाह की तरफ से हुकम हुवा है के वड पुदकी आत को जलीकतुल्लाह और महेदी मवउद हैं ऐसा ज़ाहिर करे.

आपने अपने दावे के सुभूत में दो गवाह पेश किये अल्लाह की किताब 'कुआने मज्हद' और मुहंमद आपने

(स.अ.) की कामिल होतेजा.

आपने कहा के मेरा मजहब अल्लाह की किताब और मुहंमद (स.अ.) की होतेजा है. आपने अपने दावे को आजमाने के लिये बादशाहों, डाकिमों और उलामा को दावत दी और कहा के अगर वह उन्हें इस दावे में सय्या पाअें तो उनकी ताईद करें, मदद करें और अगर वह उन्हें ठुठा या काजिब पाअें तो उन्हें इत्ल करदें. अगर ये लोग इन दानों में से कोई भी काम न करेंगे तो अल्लाह के वहां जवाबदेह होंगे.

आपका दावा इत्ना साइ, सय्या और मजबूत था के भावजुद अपनी भरपूर कोशिशों के बादशाह, हुकमरां और उलमा आपको ठुठा साबित करने में नाकाम्याब रहे.

आपने अपनी पूरी छंदगी अपना मिशन जारी रज्जा और लोगों को जुसूसन उम्मत मुहंमदिया को इस्लाम की तजदीद और अल्लाह की बस्रीरत पर बुलाते रहे... मानिंद अल्लाह के उस कौल के

“केह दो ऐ मुहंमद ये मेरा रास्ता है बुलाता हुं
अल्लाह की तरफ उसकी बस्रीरत के लिये मैं और मेरा
ताबअे ताम” (१०८) सू. युसुफ.

क्या बादशाह और क्या हुकरा, क्या सलातीन व क्या वुजरा हर दो आम व पास हजारां की तादाद में आपके पैरव हो गये, उन्होंने ने अपनी मरज्जसे अपने अेडलोअयाल और रिश्तेदारोंको अल्लाह की राह में, अल्लाह के इशक में छोडा और तकलीफो इप्रोझा को कुबूल किया.

आप (अ.स.) ने इराईजे विलायते मुहंमदिया के जो अेडकाम अपने मानने वालों पर इर्ज किये वह ये हैं.....

- १) तर्के दुन्या
- २) तलजे - दिदारे पुदा
- ३) जिंके हवाम
- ४) डिजलत अनिल्लक
- ५) सोडजे सादेडीन
- ६) तवककल अलल्लाड ७) डिजरत

ये सारी सिङ्गते रसूलेकरीम (स.अ.) और आपके अस्हाजे-
 भास, जुसूसन "अस्हाजे सुङ्गा" में पाई जाती थीं. महेदी
 मवउद (अ.स.) ने आकर अपने मानने वालों को ईन भास
 सिङ्गते का डामिल बना दिया और ईन अलकामात को ईर
 करार दिया और उन पर सप्ती से अमल करने का हुकम
 देकर उम्मेते मुहंमदीया को ईस काबिल बना दिया के वल
 इनाङ्गिशैज, इनाङ्गिरसूल डोकर इनाङ्गिल्लाड के मकाम पर
 पडूंय सके.

और ईसतरल आपने उनको शरीयत के बादकी तरीकत
 और मारेङ्गत की उन मंजिलों की सैर कराई जसे डम
 विलायत' से ताबीर करते हैं और उन्हें नासूत मुकाम से
 उठाकर मलकूत, जबरत और लाडूत मुकाम तक पडूंया दिया
 और ये वल मुकाम हैं के अगर किसी को डामिल डो जायें
 तो वल वासिले जाते डक डो सकता है और पुदाकी अत को
 दुनियामें अयां देज सकता है.

यूनांये नबी (स.अ.) ने इर्माया है - "तू लूजा रहेगा
 तो मुजे देजेगा - तजरुद ईप्तेयार कर (दुन्यासे) तो विसाल
 डामिल करेगा - तुम अपने शिकमों को लूजे रज्जो और
 अपने ज्जगरो को ध्यासे रज्जो और रिआयत रज्जो अपने
 अजसाद की शायद तुम अल्लाड को दुन्या में अयां देजो".

मुप्तसर ये के महेदी (अ.स.) ने आकर अलकामाते

अेहसान' और 'इराधजे विलायते मुहंमदिया' की उन तालीमात को जलकुल्लाह पर अाहिर और आम कर दिया, जूनकी इशाअत और तब्लीगे आम रसूले करीम (स.अ.) ने अपने अेहदे नुबुव्वत में नहीं की थी और ये अेहकामात मज्ही और पोशीघ डी रहे.

अव्वल अव्वल जो लोग सआदते इस्लामसे जहरामंदो मुशरई हुवे उनको अेहकामात की जजाआवरी की कुव्वत नहीं थी. विलाअ अव्वल अव्वल वक्तों में रसूलुल्लाह (स.अ.) ने मुसलमानों को उन्हीं अेहकाम की तब्लीगे इर्माइ, जून पर अमल करना मुम्किन ली था और आसान ली. ये मडक आंडजरत (स.अ.) की शककत और रेहमते इलाडी का तकाअ था जो इस तरह का तब्लीगी अस्लूज (तरीकां) अपनाया गया. आहिस्ता आहिस्ता और जतदरीज (दरजा ज दरजा) उनको विसूले दीन्या और मसाइले शरय्या की तालीम दी गइ.

यूनांये जाक अरहाजे रसूलुल्लाह (स.अ.) से ये रिवायत है के हम पर अल्लाहतआला का लरपूर अेहसान है के अव्वल तो हम मुशूरिक थे, अगर रसूलुल्लाह (स.अ.) हमपर सारे मसाइल अेक डी दंजा अाहिर इर्मा देते और यकलप्त उनकी तामील का हुकम इर्मा देते तो हम पर जडी मुसीबत आ जाती और शायद हम इस्लाम में दाजिल ली नहीं डो सकते.

रसूलुल्लाह (स.अ.) ने राइतो शककत को रवां रज्जा और ज्जा ज्जा, तदरीजन दीनकी तब्लीगे इर्माइ, यहां तक के दीन कामिल डो गया और शरीयत अपने पूरे मतनके साथ इत्मांम को पडूंयी यायुं कडीये के पूरी डोगइ...और शरीयत की इस तकमील का मरइला (30) साल में पूरा हुवा.

आं इज्जरत ने बज्जबाने लकीकत उन अेइकाम के बयान का कस्द (ईरादा) इर्माया, ज्जनका तआल्लुक इकायक से था तो अल्लाहतआलाने आपको उसके ईज्जदारो अइशा से रोका और दवते आम के तौर पर उसकी तब्लीग की ईजाजत न दी और ईर्शाद इर्माया....

“सुम्म ईन्न अलयना बयानहु”

और उसके बयान की जिम्मेदारी का इामिल उस शप्सको (यानी मडेदी (अ.स.) को) बनाया जो ईस आयत का मिस्दाक बनकर आपकी ईतरत में आपरी ज्जमाने में जलीइतुल्लाह और जातिमे विवायते मुहंमदिया बनकर मब्जिस होने वाला था. और ईसी वजह से रसूलुल्लाह (स.अ.) ने आपकी तश्रीफ आवरी को जुररियाते दीन करार दिया और आपकी तस्दीक सारे जहां और अेइले जहां पर वाज्जब की.

दवते आम के तौर पर इन अेइकामाते अेइसान की तब्लीग की ईजाजत न देने की अेक वजह ये भी थी के वइ अेइले अरब ईस्लाम से ना आशूना और बिल्कुल कोरे थे, और लकीकत के अेइकामो मसाईल जरा मुश्कील और दुश्वार थे और ईसकी वजह से शुबाह ये पैदा होता थाके कहीं अवामुन्नास के अजार्थम और ईरादे पस्त न हो जायें, क्योके शरई अेइकामों की आदत बने अत्मी कुछ जयादा देर न हुईथी और आदते शरय्याने अत्मी मिजाजों में वइ सूजो करार न पाया था - ईसलिये इन मुश्कील अेइकाम की डिइज्जत पुद आंइज्जरत (स.अ.) ने डिइकमते ईलाही के मन्शा के मवाइफ़ की, यूनांये आपने ईल्मे इकायक को राज़ ही में रज्ज्जा.

यूनांये तइसीर ‘अराईसुल्बयान’ में सरजील मोइककीक अल्लामा रजद लान ने आंइज्जरत (स.अ.) के ईस डौल का युं जिंक किया है की “अगर मैं उनसे लकीकत के बारे में

गुह्यतुगु करता तो उनका ताशअे मुरझा बज जाता (पस्या लो जाते) उनके उकुल परीदाह लोजाते (लोश ओउजाते) और बाकी पल्क (शरीयतकी तावीमसे) बेईल्मो ना इलम रेह जाती”

पस नबी (स.अ.) ने मुआशरे के अलवाल और उनकी कैफियात और उनके ज़हनी अकदार का लिहाज़ किया, उनकी समज़ और उनकी ताकते तलम्मुल के मवाज़िक आपने उनकी तावीमो तल्कीन की और अला सबिलु दावत (बतौरे दावत) तो आपने इकायक का बयान करना छोड दिया.

मगर ये भी है के इकायक की ताविमो तल्कीन आपने यककल्म नहीं रोक दी याने उसको मन्सूख करार नहीं दिया, बल्के आप ज़सके माथे पर नूरे नुबुव्वत, ताबिशे ईमानी और शौके विसाले ज़ते सुब्ज़ानी को यमकता देजते और उसको जौहरे आला के फ़ाबिल देजते, पस उसको उसी कद्र तावीम देते ज़तनी वह ताबो तवां रजता लो, और ईसी वजह से उसके ईप्ज़ा और छिपाने का भी हुकम इर्मा दिया करते थे, क्योके अवाम को मआनी के ईदराक पर दस्तरस न थी और उनकी कमबीनी का ये लाल था के वह उन 'लाहूती' मसाईल का ईलाता ली नहीं कर सकते थे

जैसाके सलीह बुजारी की अेक उदीस है ज़सकी रिवायत अबू डूरैरा (रज्ज.) ने की है ईसी बात की तरफ़ ईशारह करती है.

● उ. अबूडूरैरा (रज्ज.) ने इर्माया है के...

आंउज़रत (स.अ.) से दो ईल्म मेरे पास मडकूज़ हैं अेक तो इैला दिया हुं, दूसरा नहीं इैलाया, अगर वह इैला दूंगा तो मेरा गला काटा जायेगा

● और अब्दुल्लाह ईब्ने अब्बास (रज्ज.) ने इर्माया है के...

अगर मैं आयते करीमा 'यत नज्जलुअम्र'
की तकसीर जो मुझे मालुम है, तुमसे बयान
करूं तो तुम जरूर मुझे संगसार करोगे

ईस ईल्म से मुराद 'ईल्मुअसरार' है जो निगाहे
अग्यार से महेकूओ मसूठिन हैं और उन अस्हाब से
मुप्तस (मुन्सलीक) है जो अेडले ईरफान हैं, साहबे नज़र हैं
और उल्माबिल्लाह हैं. इल्उसूल ये ईल्मे शरई व अमल का
नतीजा है और ईस ईल्म से वुक्फा और आगही गिन
लोगों को डोती है, जो मुजाहे देके समंदरमें गोता लगा पाते
हैं और ईस मुआमले में उनकी यावरी (कामियाबी) और
दस्तगीरी डो जाती तो वड मुशाडेदात की रौशनी में अपना
संकर जारी रख सकते और बरगुच्छद बन सकते".(शरह
बुजारी शरीफ)

डर खंड के रसूलुल्लाह (स.अ.) ने अलासबीलुदावत
मजकूर अेडकाम को बयान नहीं इर्माया बल्के इन मुकदस
अेडकाम का ईज्जदारो ईब्लाग उस शप्स पर मौकुफो मुन्डसिर
रખ्या जो ईस मन्सबे जलीला और ओडदअे नबीला के
लिये अजल से मुन्तजब हुवा डो और वडी शप्स ईस
पास मन्सब का जातिम भी डो, जो आपकी ईतरतो उम्मत
डी में से डो और पुलासाअे अेडले बैत डो, और रसूलुल्लाह
(स.अ.) की विलायते पास का मज्हर डो.

और ये नुबुव्वत के असरार और हिकमतों का
तलबो तक़ा था के अेक मज्हरे पास विलायत भी डोता
- और ये मज्हरे पास मौकुफन महेदी (अ.स.) डी की अते
गिरामी थी.

यहां ये बात साबित डोती है के रसूलुल्लाह
(स.अ.) ने लोगों के तबाअ और माडौल और उनकी

મોજુનિયત કો મદે નજર રખ્યા. આપને અપની ઉમ્મત ઔર અપને યારો અરુહાબ કે ઉન રૂહજાનાતો મિલાનાત કી ભી રિઆયતેં મલૂઝ રખ્યાં, જો બતૌરે તફલીદો પૈરવીએ - અંબિયા ઈન લોગોં કે દિલો મેં મુર્તસિમ થી. વહ એહલે અરબ ઈસ્લામ ઔર ઈમાન સે નાઆશૂના ઔર બિલ્કુલ કોરે ઔર બેગાનાવશ થે. બસ યહી એક એસા પસે મંઝર થા કે રસૂલુલ્લાહ (સ.અ.) ને 'ઈલ્મે મારેફત' ઔર 'એહકામે એહસાન' કી ઉન લોગોં કો તાલીમ નહીં દી ઔર ઈન એહકામ કી ઈશાઅતો તબ્લીગ હી નહીં કી ઔર વહ મુબારકો મુકદ્દસ અસરાર જો આપ પર અલ્લાહ કી જાનિબસે મુન્કશિફ હોતે થે, ઉસસે આપને ઉન લોગોં કો બાબબર નહીં કિયા....

.... ઔર ઉસકે બયાન કી ઝિમ્મેદારી કા હામિલ ઉસ શખ્સ કો બનાયા જો આપકી ઈતરત હી સે હોતા ઔર વહ ભી વહ હોતા જો અફઝલો આલા હોતા કયોં કે વહ અપની ઉમ્મત મેં ખુદા કા ખલીફા હૈ, ઈસલિયે વહ બિલ્વકીન સબસે અફઝલ હૈ, ઔર ઉસકે અફઝલ હોને કી તૌજીહ્ યે હૈ કે વહ મઅસૂમ હૈ.

ઈસી વજહ્ સે રસૂલુલ્લાહ (સ.અ.) ને આપકી તશ્રૂફિ આવરી કો 'ઝુરિયાતે દીન' કરાર દિયા ઔર આપકી તસ્દીક સારે જહાં ઔર એહલે જહાં પર વાજીબ કી ઔર ફર્માયા કે....

- મહેદી મેરે અહલે બૈત સે હોગા
- આખીરી જમાને મેં મબૂઊસ હોગા
- મેરે ઔર ઈસા (અ.સ.) કે દરમ્યાન કે જમાને મેં હોગા
- દાફએ હલાફતે ઉમ્મતે મુહંમદિયા હોગા
- દીને ઈસ્લામ કી તજદીદ કરેગા
- મેરે નકશે ફદમ પર ચલેગા કભી ખતા નહીં કરેગા

યે સારી બાતેં ઈમામુના હઝરત સૈયદ મુહંમદ જીવનપૂરી કી ખાત પર સહી વ સાદિક સાબિત હો ચૂકી હૈં. ઓર યે બાત ઉન અહાદીસ સે સાબિત હો જાતી હૈ જો બશારત કે તૌર પર રસૂલે કરીમ (સ.અ.) ને મહેદી (અ.સ.) કે બારે મેં ઈર્શાદ ફર્માઈ હૈં....

જયાદા તફ્સીલ મેં ન જાતે હુવે, હમ યહાં પર સિર્ફ દો અહાદીસ પેશ કર રહે હૈં જીસસે આપકી તશ્રીફ આવરી મુશ્રિયાતે દીન સે હૈ ઓર આપકી તસ્દીક સારે જહાં ઓર એહલે જહાં પર વાજીબ હૈ યે બાત સાબિત હો જાતી હૈં.

પહેલી હદીસ કી રિવાયત અબૂદાઉદ ને કી હૈ ઓર દૂસરી હદીસ કી રિવાયત હાકિમ ઓર અબૂનઈમ ને કી હૈ. ઈબ્ને માઝા ને કુછ ઈપ્તેસાર કે સાથ ઓર ઈમામ એહમદ (રજી.) ને ભી અપની મસ્નદ મેં યે હદીસ બયાન કી હૈ.

● ૧) રસૂલુલ્લાહ (સ.અ.) ને સાફ અલ્ફાઝ મેં યે ઈર્શાદ ફર્માયા હૈ કે ...

અગર દુન્યા કા એક દિન ભી બાકી રેહ જાયેગા તો અલ્લાહતઆલા ઉસ દિનકો ઈત્લા દરાજ કર દેગા યહાં તક કે એક શખ્સ મેરે એહલે બૈત સે પૈદા હો જાયે ઓર વહ મેરે એહલે બૈત સે હૈ, ઉનકા નામ મેરા નામ, ઉનકે બાપ કા નામ મેરે બાપ કા નામ હૈ (અબૂ દાઉદ)

ફિર આંહઝરત (સ.અ.) ને અપને બયાન કા જોર ઈસ બાત પર રખ્યા કે મહેદી કી તસ્દીક વાજીબ હૈ ઓર અમ્રો નવાહી મેં આપકી ઈત્તેબા ફર્ઝ હૈ બલકે સરાહતન યે કેહકર આપ (સ.અ.) ને ઈસ અમ્ર કો ઓર ભી મુસ્તહકમ કર દિયા કે મહેદી ખલીફતુલ્લાહ હૈં.

● ૨) યૂનાંચે હ. સૌબાન સે રિવાયત હૈ કે...

रसूलुल्लाह (स.अ.) ने इर्माया के तुम्हारे कन्जे जिलाइत के पास तीन अशपास जो पुल्हा के लणकों में से होंगे लणगे.. (बनी उमय्या, बनी इतिमा, बनी अब्बास) मगर वह किसी अक को भी न भीलेगा, फिर मशरीक से कालीजंडीयां नमूदार होंगी (तातारी कौम जिन को अबुल्कलाम आजादने 'याजुज - माजुज' लिखा है) और तुमसे सप्त कितालो- जिदाल करेंगी और इस तौर पर के किसीने आज तक ऐसी लडाई नहीं की होगी, फिर उसके बाद महेदी जलीकतुल्लाह का जुद्ध होगा पर जब तुम महेदी की जबर सूनी तो उनके जुद्ध में डाँजिर होकर उन से बैत करो, ज्वाह तुमको बरफ पर से रेंगते रेंगते जाना पड़े, क्योंकि वह महेदी जुदा का जलीक है.

इन दोनों हदीसों पर ताम्बुल से चंद उमूर मुन्कशिफ़ होते हैं.

१) पहली बात ये के महेदी की बेअसत लाजदी व जुदरी है, क्यों के जबतक आप मजूरिस नहीं हो जाते उस वकत तक ये दुन्या हसगिज मुन्कतेअ न होगी. आपके मजूरिस होने के बाद ही ये दुन्या मुन्कतेअ होगी क्यों के दुन्या के ईन्केताअ को आपकी बेअसत से मरबूत किया गया है.

२) दूसरी बात ये के जिलाइत के लिये पुल्हा का जालम जदालो कताल भी अक अमे जुदरी है.

३) तीसरा ये के 'कन्ज' से मुराद अहिरी जिलाइत है याने सलतनत, क्यों के रसूलुल्लाह (स.अ.) ने इर्माया है के 'मेरे बाद जिलाइत (सिर्फ) ३० साल बाकी रहेगी, इसके बाद मलूकीयत का दौर दौरा रहेगा और इस शिदते ईप्तेलाइ के साथ के अक हिस्सा दूसरे हिस्से का इतिहास दुश्मन होगा. जिन में से हर अक दूसरे की मुजाहिदत करता रहेगा." जिलाइत और कन्ज के नुकतअे निगाह से कताल का वकूअ

ईस माना को मज्जह तकवीयत देगा. महेदीके लिये जिलाइते अहिरि का कोई सवाल ही पैदा नहीं होता, अरक ईस जिलाइत से यहां वह सलतनते उलानिया मुराह नहीं है जिससे अंबिया और मुरसलीन मुत्तसीफ थे.

४) और चौथा अम्र ये है के सियाह जंडीयोवालों का पुरासान में नमूदार होना और महेदी (अ.स.) का उनके इमराह होना. क्योंकि इदीसे मज्जूरमें जो लइक (सुम्म) मज्जूर है तो वह ईस बात की दलावत करता है के महेदी का जमाना और उनका अहद, जंडीयोवालों के बाद का अहद है.

५) और पांचवा अम्र ये है के महेदी का जुहूर तो इन सारे किरसों के और जंडोके पतम हो जाने के बाद होगा. ईस सूरते डाल में ये बात के 'महेदी' का 'रायाते अस्वद' कवी जंडीयोकी मरथ्यत में 'अहिर' होना मुराह लिया जाये तो अहिर है के ये बात अकसर मज्जूरने इदीस ही के जिलाइ होगी, ईसके आवजुद जिसका उदआ व ईसरार यही है तो उसने न नइसे इदीस ही को समज और न उसके माना दुरस्त किये.

६) अम्र शिशम ये है के महेदी का जलीइतुल्लाह होना इदीसे मज्जूर से साबित है. जिस किसीने भी आप को जलमजलत 'जलीइते रसूलुल्लाह' कहा तो उसका ये कौल मनघउत भी है और वह पूदभपूद गलत है और उसने इदीस के माना को जलत मलत कर दिया.

और यही वह सूरतेडाल थी जिसकी वजह से ईजतराब पैदा हो गया. जब आपके जुहूरो बेअसत का पुरशीदे जहांताब यमका और अइकामे विलायत की किरने उम्मतियों के दिलोंको रौशन व मुनौवर करगई और सारे वह असरारे निहां और रमूजे पिन्हां और वह तमाम अइकाम जो उनोज किसी पर मुन्कशिक नहीं हुवे थे, आपकी दावत के

નતીજે મેં સબ પર અયાં હો ગયે. સિફ યહી નહીં હુવા બલકે આપને ઈન એહકામ કી તહજીબ વ તરતીબ કી.

સચ્ચી બાત તો યહી હૈ કે ઈન ઊસૂલો એહકામ કા સરચશમા ઉસૂલે શરીયત હી હૈ. મગર ઈનકી અદાયગી મેં સખ્તી કા ઉન્સર (હિસ્સા) શામિલ હૈ.

બિલાશુબહા ઉલૂમેકુર્આની કી તફસીમ હમ દો તરહ પર કર સકતે હૈં.

૧) ઈલ્મુલ્શરઅ વલ્એહકામ

૨) ઈલ્મુલહકીત વલ્એહસાન

યાની એક હૈ ઈલ્મે શરીયત ઓર દૂસરા હૈ ઈલ્મે હકીકત. ઈન દોનોં ઉલૂમોં કે ઈઝહારો - બયાન કે લિયે દો લિસાની રવયોં યા દો મુખ્તલીફ તર્જેબયાનકી ઝુરરત હૈ, પહેલી જબાન શરઈ હૈ ઓર ઈસ બાત સે મુત્તસીફ હૈ કે જીસમેં અંબિયા તકલ્લુમ ક્રિયા કરતે હૈં ઓર દૂસરી જબાન હકીકી હૈ જીસમેં મહેદી (અ.સ.) મુતકલ્લીમં હુવા કરતે થે.

જબ યે તૈ હૈ કે શરીયત ઓર હકીકત કે ઊસૂલ અલગ અલગ હૈં, તો આપને 'બલિસાને હકીકત' ખુદાકી રૂયત (દિદાર) કી તરફ મખ્લૂક કો દાવત દી, ઈસ દાવત મેં જો એહમ તરીન નુક્તા હૈ સો વહ યે હૈ કે આપ શરીયત પર સખ્ત કારબંદ થે. પસ ઈન દો જહતોં સે આપકે મન્સબ ભી દો હૈં...

એક ખુદાકી ખિલાફત

ઓર

દૂસરા રસૂલુલ્લાહ (સ.અ.) કી ખિલાફત.

- ખલીફતુલ્લાહ હોને કી જહત યે હૈ કે આપ એહકામે હકીકત કી મુસ્તકિલ દાવત દિયા કરતે થે. ગોયા કે

आपका मन्सब यही था और

- जलीक़तुरसूलुल्लाह (स.अ.) एस ज़ेदत से हैं के आप सरताब पा ताबअे शरीयत थे अब जस यही वल हैसीयत है के आप पुछके जलीक़े हैं.....

“सुम्म ईन्न अलैना जयानहू” में जो जमीर गायज है उसका मरजअ आपने अपनी ज़त को बताया, यानी ये के ‘जयाने कुर्आन’ महेदी की ज़बान से डोगा क्यों के आप पुछ के जलीक़े हैं और जलीक़ा डोने की वजह से मुइस्सरीन में अकमल हैं.

पस यही वल हैसियत है के आपके क़ौल को मानना वाज्जब है और उसके मिनज़ानिज डक डोने का अ़ैतकाद भी अेक नागुज़रियत है. एस लिये के आप अल्लाह के जलीक़े हैं और जो अल्लाह का जलीक़ा डोगा वल जता से मासूम डोगा.

इमनि रसूल (स.अ.) है...

अल् महेदी मिननी, यफ़्फू असरी, वलायुप्ती
महेदी मेरी आलसे है, मेरे नकशे कदम पर चलेंगा,
जता नहीं करेगा

कुर्आने पाक की अपने ज़ाहरी माना के लिहाज से जो क़िस्में मुतैयन डोती हैं वल सभी शरअ शरीक़ (शरीयत) से मुताल्लिक़ हैं, और उनका ज़हूर उसी अडद में डो गया जबके आइताबे शरीयत (याने ड.मुहंमद रसूलुल्लाह स.अ. की रिसालत) की क़िरनें सारी डी दुन्या को मुनव्वर कर रही थीं. और अेडकामे शरीयत की सारी ज़ातें जल्क़ पर आशकारा डोगई और क़्या अरज और क़्या अजम दोनो डी उसपर कारबंदे आमील डोगये...

और जो ज़ाहिरि नहीं है, वह अपनी तकसीम के विहाज से इकीकत से मुताद्विक हैं और जो इब्नारत हैं सिर्फ इल्मुल्इकायक से और अल्लाह की ज़ातो सिफ़त से, उनका इज़हारो अैलान रसूलुल्लाह (स.अ.) के अेहदे मुब्बारक में अवाम पर न तौरे दावा या उिदआ नहीं हुवा था, और इस इल्म को ह. रसूलुल्लाह (स.अ.) ने बयान नहीं किया और ये इल्म मफ़्ही व मुस्ततर ही रहा और इन सारे रमुजो गवामिस का इज़हार ह. महेदी (अ.स.) के जमाने तक रुका रहा और महेदी (अ.स.) के बाद उनका जुदूर हुवा.

इज़ार इज़ार मर्तबा अल्लाहतआला का उनपर दुइदो सलाम हो और उस वक़्त तक हो जब तक पूर्शादि जहां ताब अपने भरपूर उइज के साथ निस्कुन्नहार पर पडूंय कर रौशनीयां इैलाता रहे...(अल्कौलुल्महेमुद)....

हमने यहां पर अल्लामा इज़रत सैयद अली उई 'मककी' जडे मियां सालब यदुल्लाही की तस्नीफ़ 'अल्कौलुल्महेमुद इी महेदियल्मवउिद' के इवाले से साबित किया है के.....

- बयाने इकायक आम तौर से रसूलुल्लाह (स.अ.) के अेहद में नहीं हुवा, मुतराणी ही रहा
- और ये के 'इल्मुल्इकायक वल् अेइसान' को महेदी (अ.स.) ने आकर ખલकुल्लाह पर ज़ाहिर और आम कर दिया, जो आयते करीमा 'सुम्म इन्न अलैना बयानहु' के मिस्दाक थे.
- और ये के महेदी की ज़ात 'ખલીફतुल्लाહ' है, इसलिये आपसे बैत करना, आप पर इमान लाना, आपकी तस्दीक करना और अम्रो नवाही में आपकी इत्तेबा करना इर्ज़ है.
- और ये के जो 'अेइकामे विलायत' आपने उम्मत मुहंमदिया पर इर्ज़ किये वह नये नहीं थे, रसूले करीम (स.अ.) ખુદ और आपके ખાસ ખાસ અસ્લાબ उन अेइकाम पर पाबंद

થે ઓર ઉન સિક્કાત સે મુત્તસીફ થે ઓર જો અસ્લાબ ઈન દરજજે કે હામિલ થે ઓર ઈન એહકામાત પર સપ્તી સે પાબંદ રહેનેકી તાબોતવાં રખતે થે, ઉનકો આપ (સ.અ.) ને ઈન એહકામાત કી તાલીમો તલ્કીન કી થી, મગર ઈસકી તબ્લીગે આમકી ઈજાજત નહીં દી થી ઓર ઈસકે ઈખ્લા કા હુકમ દિયા થા, જૈસા કે હ. અબૂહુરૈરા (રજી.) કી રિવાયત સે સાબિત હૈ.

દર હકીકત ઈન 'એહકામે વિલાયત' 'એહકામે એહસાન' કા સરચશમા ઊંસૂલે શરીયત હી હૈ મગર ઈસકી અદાયગી મેં સપ્તી શામિલ હૈ, જો આમ અસ્લાબ પર નબી (સ.અ.) કે જમાને મેં નહીં થી.

ઈસીલિયે મહેદી (અ.સ.) ને આકર ફર્માયા કે મેં કોઈ નયા મઝહબ નહીં લાયા હું

“મઝહબે મા કિતાબુલ્લાહ વ ઈત્તેબાએ સુન્નતે મુહંમદુરસૂલુલ્લાહ”

મેરા મઝહબ અલ્લાહ કી કિતાબ કુર્આન મજીદ હૈ ઓર રસૂલે કરીમ (સ.અ.) કી કામિલ ઈત્તેબા કરના હૈ

હ. અલી (રજી.) સે મરવી હૈ ફર્માયા કે

મહેદી (અ.સ.) કિસી બિદતકો મિટાયે બગૈર ઓર કિસી સુન્નત કો કાયમ કિયે બગૈર ન છોડેંગે.

આપને આકર ઈબાદત મેં ઈખ્લાસો લિલ્લાહીયત પૈદાકી ઓર શિકે ખફી સે ભી બચને કી તલ્કીન ફર્માઈ... જૈસા કે કુર્આને મજીદ મેં ફર્માને ઈલાહી હૈ.....

કેહદે કે મેરી નમાજ ઓર સબ ઈબાદતેં ઓર મેરા જીના ઓર મરના સબ અલ્લાહ કે લિયે હૈ જો સારે જહાં કા પરવરદિગાર હૈ, કોઈ ઉસ્કા શરીક નહીં ઓર ઈસી તૌહિદ કા મુઝ કો હુકમ હુવા હૈ ઓર મેં સબ સે પહલા મુસલમાન હું' સૂ.અન્આમ (૬) આયત (૧૬૩) (૧૬૪).

और एबादत में एप्लास पैदा करने के लिये तर्के दुन्या, उजलत अनिलजलक, सोलजते सादिकां और जिकेदवाम इर्ज किया और जसका जिक जयादा किया जाये उससे एशक पैदा होकर उसे देजने की तलज ली पैदा होती है और जब अकिर तलजे द्दिदारे पुदा में ज्जुंदगी बसर करता है और एस मामले में अल्लाह पर तवककल करता है तो अक दिन असा आता है जब बंदे की नजर के सामने के सज डिजाज उठा लिये जाते हैं और बंदा एस इानी दुन्या में यश्मे सरसे अल्लाह का द्दिदार करने के इाबिल हो जाता है. एसिलिये महेदी मवउद (अ.स.) ने तर्केदुन्या, तलजे द्दिदारे पुदा, तवककल अलल्लाह और जिके दवाम को इर्ज इर्माया.

● और इर्माया के.....

बंदा ठीपर वाडे का रास्ता लाया है
'बंदा देजने वालोंका मजुहज लाया है'

● और ताकीद इर्माई के

'हर जके बाशी बा यादे पुदा बाशी'
जहां कहीं ली रहो अल्लाह की याद के साथ रहो

इमामुना की तालीमात में जिके जई और जिके दवाम की अेइमीयत को मदे नजर रखते हुवे हमने एस छोटे से रिसाले में जिके दवाम के मुताल्लिक कुरआनी आयतों को यकजा किया है और महेदवीयत की रौशनी में ठीनकी तशरीह करने की कोशिश की है...

उम्मीद है के कौम के लोग जिकुल्लाह की अेइमीयत को समज कर उस पर कारबंद होनेकी कोशिश करेंगे.



② जिफुल्लाह कुर्आनकी रौशनी में

इर्माने जारी त्आला है.....

इ.ज़ कुर्नी अज़ कुर् कुम् सू.जकरा (२) आ. (१५२)

“तुम मुझे याद करो मैं तुम्हें याद करूंगा”

इर इर्माया....

इज़ कुल्लाह. क.मा अल्ल.म.कुम् मा लम् तकूनू तअ्ल.मून

सू. जकर (२) आ. (२३१)

“पस याद करो अल्लाह को जैसा सिखाया है तुमको,
जैसे तुम नहीं जानते थे”

इर इर्माया....

वज़ कुल्लाह. कसीरल् लअ.ल्लकुम् तुइलिहून

सू. जुमा (६३) आ. (१०)

जकरत अल्लाह का जिक करो बहुत मुम्किन है
तुमको इलाह नसीब हो जाये

कुर्आन शरीफ में मुप्तलीह आयतों में जिके कसीर के तआल्लुक से ईशदिजारी मौजूद है, इस मुप्तसर रिसाले में हमने कोशिशये की है केबलिहाजे कुर्आने मज्हद जिककीतालीम को मुप्तलीह उन्वानों की शकल देकर जिफुल्लाह के जारे में तमाम मवाद को यकजा किया जाये ताके पढने वाला इस रिसाले को पढकर उन तमाम आयतों की तइसीरो तर्जुमे से अेक ही वकत में इयदा उठा सके.

मस्लन् जिक का हुकम, जिक का तरीका, जिक के अवकात,
जिक के इयदे और जिक से गइलत जरतने का अंजाम
वगैरह वगैरह

१. जिक्र का हुकम

सू निसाअ (४) आयत नं. १०३ में अल्लाहतआला ने वाजेह तौर पर मोमीनों से बसेगअे अम्र जिताब इर्माया है... यूनांचे हुकम डोता है....

झर जब तुम नमाज से झरिग डो जाव तो ढडे और बैठे और वेठे डर डाल में अल्लाड का जिक्र करते रडो

فَإِذَا قَضَيْتُمُ الصَّلَاةَ فَادْكُرُوا اللَّهَ
 قِيَامًا وَقُعُودًا وَعَلَىٰ جُنُوبِكُمْ..... النَّسَاءُ 103

इ.ई.अ. इ.अ.मुसुबवात.इअकुरुल्लाड. ड़ियाभ्व वकुविह्व व अडवा जुनूबिकुम्

ईस आयत के तेडत मुइस्सीरीन ने ये लिजा है

- साडभे तइसीरे कसीर

लिजते है “यानी तुम अपने तमाम अडवाल में जिके ईलाडी करो”.

- साडभे तइसीरे बैजावी

लिजते है “मुसलमानों तुम जुम्वा डालात में जिकुल्लाड पर मदावमत करो”.

- साडभे तइसीरे जलालैन

लिजते है “पस याद करो अल्लाहतआला को ढडे भी, बैठे भी और वेठे भी यानी अल्लाड का जिक्र डर डालमें करो”.

- साडभे तइसीरे डुसैनी

लिजते है “और कडागया है के ईससे मुराद अल्लाहतआला को डर डालत में याद करना है”।

..... મુખ્તસર યે કે ઈન તમામ હવાલોં સે યે સાબિત હોતા હૈ કે જિકે દવામ એક મુફ્તસર કી નઝર મેં નહીં બલ્કે મુફ્તસરીન કી જમાઅતે કસીર કે પાસ હર હાલ મેં ફર્જ હૈ. નીજ ઈસ આયત કી તફ્સીર મેં સાહબે તફ્સીરે મઆલિમુલ્લજલ ને યે રિવાયત દર્જ કી હૈ.....

“હ. આયશાસિદ્દિકા સે મરવી હૈ - હ.આયશા ઈર્શાદ ફર્માતી હૈં કે રસૂલુલ્લાહ (સ.અ.) અપને તમામ અહવાલ વ અવકાત મેં જિકે ઈલાહી કરતે થે”.

ઈન્સાન યે ત્રીન હાલતોં સે કિસી હાલ ખાલી નહી રહ સક્તા યાતો વહ ખડા હોગા યા બૈઠા હોગા યા લેટા હોગા. ઈસ આયત કે જરીએ અલ્લાહ જલ્લો શાનાને અપના જિક ઈન ત્રીનો હાલતો મેં કરને કી તાકીદ બસેગએ અમ્ર ફર્માઈ હૈ જસસે જિકે દવામ' કા ફર્જ હોના સાબિત હોતા હૈ- ઈસિલિયે રિસાલત માબ સલ્લમ ને અપને જુમ્લા અહવાલ વ અવકાત મેં જિકે ઈલાહી પર મદાવમત કી ઓર અહાદીસ સે યે સાબિત હૈ કે આપને અપની ઉમ્મત કો જિકે દવામ કરને કી તલ્કીન ફર્માઈ હૈ.

२. जिके कसीर का हुकम

सू. अहज़ब (३३) आ. (४१) में अल्लाह तआला इर्माता है...
और ईमानवालो अल्लाह को बख़ोत याद करो (जिके कसीर करो)

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذْكُرُوا اللَّهَ ذِكْرًا كَثِيرًا

या अय्युहल्लज़ीन. आमनुज़् कुरुल्लाह. जिकन् कसीरा (४१)

- साहबे तफ़सीरे मआविमुत्तञ्जल ने इस आयत की तफ़सीर में ये रिवायत दर्ज की है "हज़रत मुजाहिद ने ईशाद इर्माया है के जिके कसीर ये है के तू अल्लाह जल्लोशाना को कभी न भूले"

(तफ़सीर मआविमुत्तञ्जल जूज़ (३) सफ़ा १७८ मत्बुआ मिसर)

- और साहबे तफ़सीर शेख़ अकबर ने इस आयत की तफ़सीर इन अल्फ़ज़ में की है.....

"ये जिके ईलाही का अमल इंमेशा और फ़ामिल वक़्त में होना चाहिये ताके इनाअे सर्मदी हासिल हो.

- और नीज़ साहबे तफ़सीरे दुसैनी ने इन रिवायतों को इसी आयतकी तफ़सीर में युं लिखा है....

जनाब सलमीकुदसे सिरह इर्माते है के जिके कसीरसे मुराद जिके इल्मी है क्योंकि जिके इवाम दिल से ही हो सकता है, ज़ुबान से मुमकिन नहीं.....

और लताईइक़शरी में बयान किया गया है के जिके कसीर का हुकम मुहब्बते इक़ की जानिब ईशारा है यानी उसको दोस्त रખ्को क्यों के ये बात मुसल्लिम है के जो किसी को दोस्त रખता है तो उसको ज़यादा याद करता है और दोस्ती की अलामत जिक ही की कसरत है और दोस्ती

ईसबात का मौका नहीं देती है के जुबान, दोस्त के जिक्र से और दिल उसकी झिंक से झारिग रहे. (तफ्सीरे हुसैनी जिल्द (२) सफ़ा १५५)

- और नीज साहबे तफ्सीर ईब्ने कसीर ने ईस आयत की तफ्सीर में अक इदीस को नकल इर्माया है. ईमाम अहमद हुंजल से ब रिवायते उ.अबुसईद जिद्री मरवी है के उ. मुहंमद अरबी स.अ. ने ईर्शाद इर्माया के जिक्वलाह ईल्नी कसरत से किया करो के लोग तुम्हे मजनुं कलने लगे. (तफ्सीर ईब्ने कसीर जुज सानी सफ़ा ४८५ मतबूआ मिसर)

- बहरहाल साहबे तफ्सीर मुहंमद बीन जरीर तिथ्री (अल्मुत.वईई ३८० डि.) से लेकर साहबेतफ्सीर इहुलबयान ईस्माईल (इकफ़ी) तक के तमाम मुफ़रिसरीन की मुतफ़ीका राये ये है कि जिक्दवाम इर्त है और मजकूर आयत में अल्लाहतआला ने बसेगअे अम्र हुकम दिया है और मसदर लाकर उसको 'मोअककद' इर्माया फिर 'कसीर' इर्माकर और भी ताकीदे अजीम इर्मादी

और अल्लाहतआला ने सू.अ-कबूत में ये ईर्शाद इर्माया है के वल.जिक्वलाहि अकबर (सू. अ-कबूत आयत ४५)

- ईस आयत की तफ्सीर में शेख अकबर ने ये लिखा है...

“और अल्लाहतआला का जिक्र बहुत बडा है यानी वह जिक्द ज़त है जो इनाये मडज़ के मुक़ाममें किया ज़ता है और इकतूआला जल्लोशाना की नमाज़ बडा में बवक़ते तम्कीन अदा की जाती है और ये (दिदारे पुदाअेतआला) तमाम अज़कार और नमाज़ों से बढकर है.

- तफ्सीर इहुलबयान ने ईस आयत 'वलजिक्वलाहि अकबर' के तहत लिखा है.....

ઔર અલ્લાહતઆલા કા ઝિક જુલા તાઆત સે અફઝલ હૈ ઈસલિયે કે બંદે કા અલ્લાહ કો યાદ કરને કા સવાબ 'અલ્લાહ કા બંદે કો યાદ કરના હૈ' ચૂનાંચે ઈશ્દિ ખુદાવંદી હૈ કે "તુમ મુઝે યાદ કરો મૈં તુમ્કો યાદ કરુંગા"

ઔર હ.મુહંમદ (સ.અ.) ને ઈશ્દિ ફર્માયા.....

"ઈશ્દિ રબ્બુલ્ઈજજત હૈ કે ઉસને ફર્માયા મૈં મેરે બંદે કે ગુમાન કે સાથ હું ઔર મૈં ઉસકે હમરાહ હું, જીસ વક્ત કે વહ મેરા ઝિક કરતા હૈ. અગર વહ મુઝે અપને નફસ મેં યાદ કરતા હૈ તો મૈં ઉસકો અપની ઝાત મેં યાદ કરતા હું" ઔર અગર વહ મુઝેકિસી મજલીસ મેં યાદ કરતા હૈ તો મૈં ઉસકો ઉસકી મજલીસ સે બઢકર મજલીસ મેં યાદ કરતા હું ઔર ઈસ ઝિક સે મુરાદ ઝિકે ખાલિસ હૈ ઔર યે વહ ઝિક હૈ જો ઉન આમાલ કે ઝિક સે પાક વ સાફ હૈ જીસ મેં યે ઝહિરી આમાલ મખ્લૂત રહેતે હૈં ઔર વહ કાફિરોં કી ગરદન ફતા કરને ઔર ગુલામોં કો આઝાદ કરને ઔર અહબાબ કો માલ અતા કરને સે બુલંદતર હૈ. ઝિકે ઈલાહી કી ઈખ્તેદા 'તૌહિદ' સે હૈ ફિર 'તજરીદ' યાની માસિવા અલ્લાહ સે અલાહેદગી ઈખ્તેયાર કર લેના હૈ, ફિર 'તફરીદ' યાને અપને હસ્ત વ બૂદ સે નિકલ જાના હૈ જૈસા કે હુઝૂરે કરીમ સ.અ. કા ઈશ્દિ ફૈઝે બુન્યાદ હૈ કે "મુફર્રેદીન આગે બઢ ગયે" સહાબા ને અર્ઝ કિયા મુફર્રેદીન' કૌન હૈ. ઈશ્દિ હુવા 'વહ મદ ઔર ઔરતેં હૈં જો અલ્લાહતઆલા કો બકસરત યાદ કરતે રહતે હૈં' (તફસીર રુહુલબયાન, જુજસાની સફા ૯૮૧ તબઅ ઉસ્માનિયા પ્રેસ ઈસ્તંબુલ)

બહવાલએ કિતાબ 'ઝિકેદવામ' મુસન્નીફ

"મૌલાના મૌલવી હ. સૈયદ મહમૂદ સાહબ

અકેલવી મૌલવી ફાઝીલ નાગપૂર યુનીવર્સીટી

३. जिक्र का तरीका

सू. अअर्राफ़ (७) आयत (२०५) में अल्लाह तआला जिक्र का तरीका बताते हुवे इर्माते हैं....

और अपने परवरदिगार का जिक्र करते रहो अपने ज़ु में गिडगिडाते हुवे और पौफ़ के साथ और बे आवाज़ निकले ज़भान से (आवाज़के बगैर याने सांसों में) सुब्ह और शाम और गाइलों से मत होना.

وَإِذْ كُرِّرْنَا فِي نَفْسِكَ تَضَرُّعًا وَخِيفَةً وَدُونَ
الْجَهْرِ مِنَ الْقَوْلِ بِالْغُدُوِّ وَالْآصَالِ وَلَا تَكُنْ

مِّنَ الْغَافِلِينَ ۝ الاعراف २०५

वज़कुर रब्ब.क. ई नफ़्सिक. तज़.रुअं व. पीफ़.
तं व. व.दून.लज़ह रि मिनक़व्वि बिल्गुदुव्वि
वल्आसालि व.ला. तकुम् मिन.ल् गाइलीन
(सू. अअर्राफ़ (७) आयत (२०५))

- इस आयत के तहत साहबे तफ़सीरे हुसैनी ने लिखा है के ..
- "अै मुहंमद (स.अ.) अपने रबको दिल में याद किया करो और उसकी याद आञ्ज, न्याजमंटी और उसके इरूल की उमीद और अद्ल का पौफ़ व अंदेशा रभते हुवे होनी चाडिये.
- और अल्लाह को बुलंद तर आवाज़ से कद्रे आडिस्तगी से यानी सिर और जेडर के दरम्यानी आवाज़ से सुब्ह और शाम पुकारो से मुराद जिक्रे दवाम' है या उसके

દૂસરે માની અવકાતે ઝિક મેં અફઝલતરીન વકત સુબહ
ઔર શામ કા હૈ.

- ઔર ઐ મુહંમદ અરબી આપ ગાફિલીન મેં સે મત હો
જાઈયે. યે ખિતાબ બઝાહિર મુહંમદ (સ.અ.) સે હૈ મગર
દરઅસ્લ મુખાતિબ આપકી જમીઅ ઉમ્મતહૈ. મફસદ યે
હુવા કે આપ ઉનસે કેહ દિજીયે કે વહ હમારી યાદ સે
ગાફિલ ન હોં. (તફસીરે હુસૈની જલ્દ અવ્વલ, સફહા ૧૮૮)

ઈસિલિયે ખાતિમે વિલાયતે મુહંમદિયા, ખલીફતુલ્લાહ
મહેદી મુરાદુલ્લાહ હ. સૈયદ મુહંમદ જીવનપૂરી (અ.સ.) ને જો
રસૂલુલ્લાહ સ.અ. કે તાબએતામ થે આકર અપને માનનેવાલોં
કો કહા કે ઝિકેદવામ હર હાલત મેં ફર્જ હૈ. ઔર ઉન્હે ઝિકે
ખફી' કી તાલીમ દી જીસ મેં બંદા હરઆતી જાતી સાંસ કે
સાથ અલ્લાહતઆલા કી વહદાનિયત કે ઊસ કલ્મેકો બુલંદ
કરતા હૈ જો સારી આસ્માની કિતાબોં કા નિયોડ હૈ, યાની
'લાઈલાહા ઈલ્લલ્લાહ' ઔર ઝિકે પાસે અન્ફાસ કી ઈસ
તાલીમ મેં 'હુંનહીં' - 'તુ હૈ કે અલ્ફાજ સિખાયે જીસકી વજહ
સે ઝાકિર બંદા અપની જાત કી નફી કરકે શિકે ખફી સે બચ
જાતા હૈ ઔર ફનાફિલ્લાહ હોકર ઈસ ફાની દુન્યા મેં ચશમે
સર સે અલ્લાહ કા દિદાર કરને કે ફાબિલ હો જાતા હૈ ઔર
કુર્બે ઈલાહી સે સરફરાજ હો જાતા હૈ માનિંદ કૌલુ-
લ્લાહીતઆલા જો કોઈ ચાહતા હૈ કે અપને રબ કા દિદાર કરે
ઊસે ચાહિયે કે અમલે સાલેહ (તર્કે દુન્યા) કરે ઔર અપને
રબ કી બંદગી મેં કિસી કો શરીક ન કરે (શિકે ખફી સે ભી
બચે) સૂ. કહફ આ. (૧૧૦).

આલીમોં ને સવાલ કિયા કે 'આપ લોગોં કો ઈલ્મ પઢને
સે ઔર કસબ કરને સે રોકતે હો' ઈસકે જવાબમેં આપ
(અ.સ.) ને ફર્માયા કે 'બંદા રસૂલે કરીમ સ.અ. કા તાબેઅૂ હૈ
જો કુછ કે રસૂલ ને મના નહીં ફર્માયા બંદા કેસે મના

ફર્માયેગા. બંદ અલ્લાહ કી કિતાબ કી રૂ સે ઝિકેદવામ કો ફર્ક ફર્માયા હૈ ઓર જો કુછ ભી ઝિક કો માનેસ્ કરે વહ હરામ હૈ કયા પઢના, કયા કસબ કરના, કયા ખાના, કયા પીના ગફલત હરામ હૈ.

ઇસ તરહ આપ (અ.સ.) ને ઝિકે ખફી કી ખાસ તાલીમ કો આમ કરદિયા ઓર પાસે અન્ફાસ કે સાથ ઝિક કરને કા તરીકા બતાકર મોમીનોં કો ઇસ આયત કા મિસ્દાક બના દિયા ઓર સાથ સાથ અલ્લાહ કે ઉસ હુકમ પર ભી કારબંદ કર દિયા જીસ મેં અલ્લાહ તુઆલા ફર્માતા હૈ કે “**وَأَبُوهُدْرَبِّكَ. لَتَأْتِيَ الْيَتِيمَ الْيَتِيمَ**” (સૂ. ૧૫. આ.૮૮). ઈબાદત કરો અપને રબકી યહાં તક કે તુમહે મૌત આજાયે યાને મરતે દમ તક અલ્લાહ કી ઈબાદત કરો.

કોઈ ભી ફર્ક ઈબાદત ઐસી નહીં કે જો ઈન્સાન કા સાથ મૌતકી હદ તક દે... નમાજ ફર્ક હૈ મગર દો નમાજોં કે બીચ મર ગયા તો મરતે દમ ઈબાદત મેં નહીં... રોજે તો સાલ મેં એક મહિને મેં ફર્ક હૈ બાકી કે (૧૧) મહિનોં મેં મર ગયા તો મરતે વક્ત ઈબાદત મેં નહીં.... જકાત તો કમાયેગા જબ દેગા.... હજ ઝિંદગી મેં એક દફા કરેગા. સિર્ફ ઝિકે ખફી હી એક ઐસી ઈબાદત હૈ જો મૌત કી આખિરી હદ તક સાથ દેને વાલી ઈબાદત હૈ. ક્યોં કે ઝિકે ખફી સાંસો કે જરીયે કિયા જાતા હૈ, સાંસકા તાલ્લુક મૌતકે સાથ હૈ જબતક સાંસ ચલી જિંદગી બાકી હૈ ઓર સાંસ બંદ હુઈ તો મૌત.

૪. ઝિક્કે અવફાત

સૂ તાહા(૨૦) આયત (૧૩૦) મેં અલ્લાહતઆલાને ઝિક્કે અવફાત યું બયાન ફર્માયે હેં.... ઈશાદે બારી તઆલા હોતા હૈ કે... તુમ ઉનકી બાતોં પર સબ્ર કરો ઔર અપને રબ કો સરાહતે હુવે ઉસકી પાકી બોલો, સૂરજ ચમકને સે પહેલે, ઔર ઉસકે ડૂબને સે પહેલે ઔર રાત કી ઘડીયોં મેં ઉસકી પાકીબોલો ઔર દિન કે કિનારોં પર, ઈસ ઉમ્મીદ પર કે તુમ રાજી હોં.

فَاصْبِرْ عَلَىٰ مَا يَقُولُونَ وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ قَبْلَ
 طُلُوعِ الشَّمْسِ وَقَبْلَ غُرُوبِهَا وَمِنْ أَنَايِ اللَّيْلِ
 فَسَبِّحْ وَأَطْرَافَ النَّهَارِ لَعَلَّكَ تَرْضَىٰ ۝ ۱۳۰ ظه ۲۰

ફરિબર અ.લા મા ય.ફૂલૂન.વસબ્બિહ બિહમદિ રબ્બિક.
 ફબ્લ.તુલૂ ઈશામ્સી વ ફબ્લ.ગુરૂબિહા, વ મિન્ આનાઈલ્લૈલિ
 ફસબ્બિહ વ અત્રાફ.ન્.હારિ લઅ.લલક. તર્ઝા
 સુ. તાહા (૨૦) આ. ૧૩૦

મુફરસીરોં કા યે તરીકા હૈ કે જહાં 'વઝકુર' લફઝ ઈસ્તેમાલ હોતા હૈ વહાં મુરાદ ઝિક્કુલ્લાહ લેતે હૈ ઔર જહાં 'વસબ્બિહ' કે અલ્ફાઝ આતે હેં ઉસસે મુરાદ નમાજ લેતે હેં.

ઈસ આયતે કરીમા મેં ભી તકરીબન સભી મુફરસીરોં ને 'વ સબ્બિહ બિહમદિ રબ્બિક' સે મુરાદ 'નમાજ' લી હૈ ઔર ઈસસે મુરાદ ઝિક્કુલ્લાહ નહીં લિયા હૈ ઈસકી એક વજહ યે હો સકતી હૈ કે ઈસ આયત કે ફૌરન બાદ અલ્લાહતઆલા ને નબીએ કરીમ સ.અ. કો મએમુતાલ્લેફીન નમાજકી પાબંદી

की ताकीद की है जैसाके इर्माया 'वअमूर अलल.क. बिस्सलाति वस्तबिर् अलैला' (और अपने मुताल्लेकीन को भी नमाज का हुकम करते रहीये और पुढ भी उसके पाबंद रहीये).

मगर यहां अेक बात गौर तलज है के जिक के मुताल्लिक आयाते कुर्आनी पर गौर करने से मालुम होता है के जहां जहां भी अल्लाहतआला ने 'सुब्हो शाम' लइज्जत ईस्तेमाल किया है वह 'जिकुल्लाह' के ईस्तेमाल किया है.

मस्लन - बिल्गुद्वि वल आसावि (सू. अअूररइ २०५)

बुकरतंव वअसीला (सू.अलज्जाम ४१)

बिल्गदाति वल्अशियी (सू. कलइ आ. २८)

और सू. अलज्जाम (३३) आ. (४२) में 'व सब्बिहूहु बुकरतंव वअसीला' के अलइज्जत आये हैं जिस का मतलज मुइस्सिरोंने नमाज ना लेते हुवे जिकुल्लाह लिया हैं या अथ्युल्ललीन. आमनुज्जुकुल्लाह. जिकरन् कसीरा (४१) व सब्बिहूहु बुकरतंव व असीला (४२) अै ईमानवालो, अल्लाह को बडोत याद करो (जिके कसीर करो) और 'सुब्हो शाम' उसकी पाकी बोलो.

और यहां भी ईस आयत में साइ तौर पर "सूरज निकलने से पडेले और उसके डूबने से पडेले अल्लाह की पाकी बयान करने का हुकम दिया है" और दिन के किनारों पर' लइज्जत ईस्तेमाल करके सुब्हो शाम पाकी बोलने के हुकम को दोहरा कर ईस वक्त की अलमीयत बताई गई है (याने सुल्लानुलैल व सुल्लानुन्नहार) मेहदी भवउद (अ.स.) ने ईन दो वक्तों के बारे में इर्माया के 'जो शप्स के ईन दोनो वक्तों को ज़ये करे वह दीने पुदा का इकीर नहीं' (ईन्साइ नामा).

आयत पर गौर करने से मालुम होता है के अल्लाहतआलाने ईस आयत में जिक के अवक़ात तइसील के साथ साइ

अल्लाह में बयान कर दिये हैं और कहा है के 'अपने परवरदिगार की पाकी बोलो सूरज निकलने से पहले और उसके डूबने से पहले और रात की घड़ीयों में और दिन के किनारों पर शायद के तुम राखो'....

....और आयत के इप्तेताम पर नबीअे करीम (स.अ.) को (और आपके वास्ते से मोमीनों को) लइक 'लअ.ल्ल.क. तर्ज़ा' से बशारत दी गई है के अगर तुम इन अवकात पर पाबंदी के साथ अल्लाहतआला का जिक्र करोगे तो उसका नतीजा वह कुछ सामने आयेगा जिससे तुम्हारा दिल पुश हो जायेगा. यहां लइक 'लअ.ल्ल.क.तर्ज़ा' इस्तेमाल हुवे हैं (शायद के तुम राखो) और ये वैसी ही बशारत है, जिसका जिक्र सू. जुहा में अल्लाहतआला ने युं इर्माया है... "वलल् आभिरतु जैरुल ल.क. मिनल्उिला, वल. सक्. युअतिक. रब्बूक. इतर्ज़ा" तुम्हारे लिये बाद का दौर यकीनन् पहले दौर से बढेतर है और अन्करीब तुम्हारा रब तुम्हें इतना देगा के तुम पुश हो जावगे"

इस आयत पर गौर करने से मालुम हुवा के अल्लाहतआलाने नबीअेकरीम (स.अ.) के वास्ते से मोमीनों को बशारत दी है और इर्माया है के अगर कोई सूरज निकलने से पहले और उसके डूबने से पहले और रात की घड़ीयों में और दिन के किनारों पर अल्लाहकी तारीफ के साथ उसकी तस्बीह करेगा तो अल्लाह उसे जैसा कुछ देगा के वह राखो हो जायेगा, पुश हो जायेगा.

तो आइये हम गौर करें के अल्लाहतआला 'अक़िर' को जैसा क्या देगा जिससे 'अक़िर' पुश हो जायेगा.

५. जिक्र के फायदे

सू. अल्लाह (३३) आयत (४९) से (४७) में अल्लाह त् आला 'जिक्र कसीर' के फायदे बयान करते हुवे इर्माता है...

औं ईमानवालो, अल्लाह को बडोत याद करो (जिक्र कसीर करो) और 'सुब्हो शाम' उसकी पाकी बोलो, वही है के दुर्इद लेजता है तुम पर वड और उसके इरिशते, के तुम्हें अंधेरो से उजाले की तरफ निकाले और वड (ऐसे) भोभीनों पर (जो सुब्हो शाम उसका जिक्र करते है) महेरबान है. उनके लिये मिलते वकत की दुआ सलाम है और उनके लिये ईज्जत का सवाब तैयार कर रब्बा है. औं नबी, बेशक हमने तुम्हें लेजा गवाड बनाकर, भुशभबरी देनेवाले और डर सुनाने वाले और अल्लाह की तरफ उसके हुकम से बुलाने वाले और यिरागे रौशन (यमकता हुवा आफताब) बनाकर और तुम (भी ऐसे) भोभीनों को भुशभबरी दे दो (जो वकत की पाबंदी के साथ जिक्र कसीर करते रहते है) के उन के वास्ते अल्लाह की तरफ से बडा इज्जल है.

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اذْكُرُوا اللَّهَ ذِكْرًا كَثِيرًا وَسَبِّحُوهُ
بُكْرَةً وَأَصِيلًا ۝ هُوَ الَّذِي يُصَلِّيْ عَلَيْكُمْ وَمَلَائِكَتُهُ
لِيُخْرِجَكُمْ مِنَ الظُّلُمَاتِ إِلَى النُّورِ وَكَانَ بِالْمُؤْمِنِينَ
رَحِيمًا ۝ تَحِيَّتُهُمْ يَوْمَ يَلْقَوْنَهُ سَلَامٌ ۗ وَأَعَدَّ لَهُمْ

أَجْرًا كَرِيمًا ۝ يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ إِنَّا أَرْسَلْنَاكَ شَاهِدًا وَمُبَشِّرًا وَنَذِيرًا ۝ وَدَاعِيًا إِلَى اللَّهِ بِإِذْنِهِ وَسِرَاجًا مُنِيرًا ۝ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِينَ بِأَنَّ لَهُمْ مِنَ اللَّهِ فَضْلًا كَبِيرًا ۝
 الاحزاب ۳۳

या अय्युइल्ललीन. आमनुअकुइल्लाड. जिकरन् कसीरा
 (४१) व सज्जि.इ इ बुकर.तं व असीला (४२)
 इवल्लली युस.ल्ली अलैकुम व मलाईक.तुइ लियुअिज.कुम्
 मिन.अ जुलुमाति ईल.नूर, व कान. बिल्मुअमिनीन.
 रडीमा (४३) तडीयतुइम् यअ. यळ.नइ सलाम,
 व.अ.अ.इ.लइम् अजरन् करीमा (४४) या अय्युइन्
 न.बियु ईन्ना अर्सल्ला.क. शाडिइं व मुअ.शिशरं व
 वनजीरा (४५) व दाईयन् ईलल्लाडि बिईअनिडि व
 सिराजम् मुनीरा (४६) व अशिशरिल्मुअमिनीन. बिअन्.
 लइम् मिन.ल्लाडि इअलन् कबीरा (४८) सू. अइज्जअ (३३)

जिंक का हुकम, जिंक का तरीका, जिंक के अवकात बताने
 के बाद अल्लाह तआला ईस आयते करीमा में अपने वादे के
 मुताबिक (जो लअल्ल.क तरअ के जरीये बयान किया गया है)
 उन ईनामात और नवाज्जशात का बयान इर्मा रहा है, जो
 अकिर को मुकर्ररा अवकात पर अल्लाह तआला के बताये गये
 तरीके के मुताबिक जिंके कसीर' करने पर अता किये जायेंगे,
 जसकी बदौलत वइ पुश पुश हो जायेगा.

ઈસ આયતે કરીમા મેં પહેલે તો વહી ઝિકે કસીર' કરને કે હુકમ કો દોહરાયા ગયા હૈ ઓર ફિરસે મુકર્રરા અવકાત 'બુક્તંવ્ વ અસીલા' યાને સુબહો શામ ઉસકા ઝિક કરને કી તાકીદ ફર્માઈ ગઈ હૈ, ઓર ઉસકે બાદ ઈનામો ઈકરામ કા વહ સિલસિલા શુરૂ હોતા હૈ કે અગર કિસી ઈન્સાન કી સમજ મેં વહ આ જાયે તો જીંદગીભર ઝિકુલ્લાહ મેં લગા રહે ઓર જરા ભી ગફલત ન બરતે.

- ૧) સબ સે પહેલે તો અલ્લાહ તઆલા ફર્માતા હૈ કે ઐ ઈમાન વાલો, અલ્લાહ કો કસરતે ઝિક કે સાથ યાદ કરો ઓર સુબહો શામ ઉસકી પાકી બયાન કરો, અગર તુમ યે કામ કરોગે તો અલ્લાહ ઓર ઉસકે ફરિશ્તે તુમ પર દુરૂદ ભેજેંગે, રેહમત નાજીલ કરેંગે.

યહાં પર યુસુ.લ્લી લફઝ ઈસ્તે-માલ હુવા હૈ - ઓર યે વહી લફઝ હૈ જો આયતે કરીમા...

“ઈન્નલ્લાહુ વ મલાઈકતુહુ યુસુ.લ્લુન. અલ.ન્નબીયી, યા અયુહલ્લ.ઝીન આમનુ સલ્લુ અલય્હી વ સલ્લીમુ તસ્લીમા”

... મેં આયા હૈ કે 'બેશક અલ્લાહ ઓર ઉસકે ફરિશ્તે નબી (સ.અ.) પર દુરૂદ ભેજતે હૈ, ઐ લોગો જો ઈમાન લાયે હો તુમ ભી નબી પર દુરૂદ ભેજા કરો'.

હઝરત અન્સ રઝિ. ને ફર્માયા હૈ કે જબ આયત 'ઈન્નલ્લાહ. વમલાઈકતુહુ યુસલ્લુન. અલન્નબીયી' નાજીલ હુઈ તો હ. સિદિકે અકબર (રઝિ.) ને અઝ્ઝ ક્રિયા યા રસૂલુલ્લાહ (સ.અ.) જબ આપકો અલ્લાહ તઆલા કોઈ ફૂલો શર્ફ અતા ફર્માતા હૈ, તો હમ ન્યાજમંદો કો ભી આપકે તુફૈલ મેં નવાજતા હૈ, ઈસ પર અલ્લાહ તઆલા ને યે આયત નાજીલ ફર્માઈ (તફસીર કન્જુલ્ઈમાન)

आयत के तर्जुमे पर और उसके शाने नुजुल पर गौर करने से साफ़ ज़ाहिर होता है के अल्लाह तआला ने मोमीनों से ये वादा इर्माया है के अगर कोई मोमीन बंदू सुब्हो शाम वक़्त की पाबंदी के साथ 'जिके कसीर' करेगा तो उसे वह चीज़ नसीब होगी जो अल्लाह तआला ने अपने प्यारे नबी ह. सैयदना मुहंमद मुस्तुफ़ा (स.अ.) को अता इर्माई थी, और वह ये के उन मोमीनों पर भी, उन आकिरों पर भी अल्लाह और उसके इरिशते दुरुद लेजेंगे, जैसा नबीअे करीम (स.अ.) पर लेजा करते हैं.

गादिबन् ये ठीक उसी तरह है, जिस तरह शबे मैराज में आपको विसाले हक़ हुवा और कुर्बेहवाही से मुशररफ़ हुवे, तो आपके इस इसरार पर के मेरी उम्मत को ये कुर्ब किस तरह हासिल होगा, अल्लाह तआलाने आपकी उम्मत के लिये 'नमाज' ब तौरे तोड़फ़ा दी और आप (स.अ.) ने आकर अपनी उम्मत से इर्शाद इर्माया के.....

'अस्सलातु मैराजुल्मुअमीनीन'

और

जो सजदा करेगा वह इरीब हो जायेगा

(वस्जुद - वक़्तरीब)

नमाज के जिसमें बंदू अल्लाह तआला की इम्दो सना करता है, तारीफ़ो तस्बीह करता है, जो इर्ज़े मवकुता है, मुकरररा अवक़ात पर ही इर्ज़ है..... अगर वह बंदे के लिये 'मैराज' है और कुर्बेहवाही का बाअस बन सकती है तो 'जिकेपुदा' जो इर्ज़े दार्दमी है, इंमेशा का इर्ज़ है और किसी हालत में साकित न होगा, इसलिये के किसी शर्त से मशरूत नहीं.....

मानिंदे कौल्लाहीतआला.....

પસ તુમ અલ્લાહ કા ઝિક કરતે રહો ખડે ઓર બેઠે ઓર લેટે, ફિર જબ તુમ મુત્મઈન હો જાવતો નમાઝ ફાયમ કરો, બેશક નમાઝ મોમિનોં પર મુકરરહ અવકાતમેં ફરૂં હૈ. (૧૦૩)

સૂ. નિસાઅ (૪)

..... તો અગર બંદએ મોમીન નમાઝ (કે જો ફરૂં વકતિયા હૈ ઓર જો કુર્બે ઈલાહી કા જરીયા હૈ) અદા કર લેને કે બાદ ઊસ ઝિક મેં લગા રહે (જો ફરૂં દાઈમ હૈ ઓર તાસીર ઓર તજકીયે નફસ કે ઐતબાર સે જયાદા બુઝુર્ગ હૈ ઊસ નમાઝ સે જો મખ્સૂસ હૈ) ઓર અલ્લાહતઆલા કે ઊસ હુકમ કી તામીલ કરે જીસે અલ્લાહતઆલાને સૂ. જુમા મેં યું ઈશાદ ફર્માયા હૈ....

કે પસ જબ નમાઝ પઢ લી જાયે તો જમીન પર (મસ્જીદ મેં) ફૈલ જાવ ઓર અલ્લાહ કા ફઝલ (બિનાઈ) યાહો ઓર ઝિકે કસીર કરો શાયદ તુમ (કુર્બે ઈલાહી હાસિલ કરને મેં) કામ્યાબ હો સકો. (૧૦) સૂ. જુમા (૬૨).

... તો ઐસે ઝાકિર બંદએ મોમીન કો અલ્લાહતઆલા કા કેસા કુર્બ અતા હોગા ઓર ઊસકી રસાઈ કિસ મકામ તક હો સકતી હૈ યે બાત ગૌર તલબ હૈ.

ઓર

ઝિકુલ્લાહ

નમાઝ ઓર દૂસરે સબ આમાલ સે અફઝલ હૈ યે બાત અહાદીસ ઓર કુર્આને મજીદ સે સાબિત હૈ યૂનાંચે ફર્માને ઈલાહી હૈ...

તુમ પર જો કિતાબ નાજલ હુઈ તુમ ઊસકો પઢ દો ઓર નમાઝ કો ફાયમ કરો તેહકીક નમાઝ ફહશ ઓર બૂરી બાતોં સે બાજ રખતી હૈ ઓર અલ્લાહ કા ઝિક બહુત બડા હૈ ઓર અલ્લાહ જાનતા હૈ જો કુઈ તુમ કરતે હો

(૪૫) સૂ. અન્કબૂત (૨૯)

इलशा से यानी बूरे अज्वाक से जो ज्जस्म से तआल्लुक रफते हैं वल्मुन्कर यानी बूरे अज्वाक से जो बातीन से तआल्लुक रफते हैं और अलजत्ता अल्लाह का जिक्र तासीर और तजकीये नइस के अतबार से जयादा बुजुर्ग है, उस नमाज से जो मजूस है. (ईसाइ नाम).

....और ये उदीसे शरीफ भी इस बात पर दलील है...

....नबी (स.अ.) ने इर्माया.....

....क्या मैं तुम्हें जैसे अमल की जबर नहूँ जो तुम्हारे मालिक के पास सब से अच्छा और सब आमाज से जयादा पाक और तुम्हारे दरजों को बढ़ाने वाला और सोने चांदी की पैरात और दुश्मन से मिलकर तुम उनकी गरदन मारने और वह तुम्हारी गरदनों मारने (याने ज्जुदा) से भी अच्छा है..... सदाबा (स.अ.) अर्ज़ किये या रसूलुल्लाह (स.अ.) वह क्या अमल है? तो आपने इर्माया 'अल्लाह का जिक्र है जो सब आमाज का सरदार और सब आमाज से अइज़ल है (मदारीक).

2) अल्लाह और उस के इरिश्ते अकिर बंदे पर दुरुद भेजेंगे रेहमत नाजल करेंगे इर्माये के बाद अल्लाह तआला बंदेको दुसरी जशारत देते हुवे इर्माये हैं के ... इस रेहमत और दुरुद भेजनेका नतीजा ये होगा के वह अंधेरो से निकल कर रौशनीकी तरफ आयेंगे.....

..... इरफान की रौशनी की तरफ

मारेफत की रौशनी की तरफ

दिदारे इलाही की रौशनी की तरफ

अल्लाह तआला कसरते जिक्र की बद्दौलत उनके दिल में वह नूर पैदा करेगा ज्जस्की रौशनी में वह शरीयत व तरीकत की मंजिलों को तै करते हुवे मारेफतकी मंजिल की तरफ बढ़ेंगे

જો કે પૈદાઈશે ઈન્સાન કિ અસ્લ વજહ હૈ.

માનિંદે કૌલુલ્લાહીતઆલા.....

वमा पवक्तुल्लन्न वल्लन्न एल्ला वि यअबुदून (प६) सू. अरियात

और मुइस्सिरों ने लिजा है के यहां 'लियअबुदून' सेमुराह 'लियअरीदून' है याने हमने नहीं पैदा किया इन्सान को और जन्नात को लेकिन हमारी 'पडेयान' के लिये 'भारेइत' के लिये और उदीसे कुदसी "मैं छुपा हुआ भजाना था मैं ने याहा के मैं पडेयाना जाओ तो मैं मुहंमद मैंने तुमको पैदा किया" भी इस अम्र पर दवावत करती है....

और सू. नूर में भी अल्लाहतआला ने आयते करीमा 'अल्लाहु नूरस्समावाति वल्लअर्र' में अपने नूरकी मिसाल बयान इर्माते हुवे वादा किया है के अल्लाहतआला का वड नूर जो मुहंमद स.अ. के सीनअ मुबारक में रौशन है. अल्लाहतआला अपने इजलों करम से उस नूर को उन घरों में रौशन करेगा जिसमें सुब्हो शाम उसका जिक करते रहते हैं जैसे लोग जन्हे तिजारत और ખરીદો इरोप्त अल्लाહ के जिक से ग्राइल नहीं करती.

માલુમ હુવા કે વહ નૂરે ખુદા જીસે અલ્લાહ ને મુહંમદ સ.અ. કે સીનઅ મુબારક મેં રખ્યા થા અલ્લાહ કી બકસરત યાદ કરને સે જિકે કસીર કરને સે મોમીન કે દિલ મેં પૈદા હોતા હૈ ઓર ઊસ નૂર કી રૌશની મેં વહ રિયાજત વ જોહદો તકવા સે ઉન લાહુતી મુકામોં તક રસાઈ કરને કી કોશિશ કરતા હૈ જીસે હમ મારેફત સે તાબીર કરતે હૈ ઓર દરજા બદરજા ઉન મંજિલોં તક રસાઈ કરતે હુએ આખિરકાર વહ ઉન બેશુમાર ઈનામો ઈકરામકા મુસ્તહક બન જાતા હૈ જીનકો પાકર બંદા બંદિયત કે મુકામસે ઉઠકર ફનાઈલ્લાહ કે મુકામ તક પહોંચ જાતા હૈ ઓર દિદારે ઈલાહી ઓર કુર્બે ઈલાહી સે સરફરાજ હો જાતા હૈ.

3. अकिरोँ पर अल्लाह और उसके इरीशते दुइद लेजेंगे और उन्हें अंधेरो से रौशनी की तरफ ले जायेंगे ये दो बशारतें देने के बाद अल्लाहतआला इर्माता है के 'व कान बिल्मुअ-मिनीन. रहीमा' और वह (जैसे) मोमीनों पर (जो सुब्हो शाम उस्का जिफ करते रहते हैं) महेरबान है.

4. और उसकी महेरबानी इस शकल में अहिर डोगी के जूस दिन वह मोमीन बंदे उससे मुलाक़ात करेंगे उस दिन उन्हें 'सलाम' के जरीये 'सलामती' अता की जायेगी.

ईशादि जारी होता है - "तदिय्यतुडुम् यव्. यल्कव्.डु सलाम" उनके लिये मिलते वक़्त की दुआ सलाम है. मुइस्सिरोँ ने इस आयत के तहत लिजा है के यहां मिलने से मुराद वह तीन मौके हैं जब 'इरिशते' मोमीनों को 'अल्लाह' के पास ले जाने के लिये तशरीफ़ लायेंगे

(1) इह कब्ज करते वक़्त

(2) कब्र में

(3) और उशूर के मैदान में जब पुदा के सामने डिस्बाज कित्बाज के लिये पेश किये जायेंगे

और अल्लाहतआला ने इस आयत के तहत अकिरोँको इन तीनों मौकों पर सलामती की बशारत दी है. और जूसे यह तीनों मौकों पर सलामती मिल गई तो मानलो के वह काम्याज हो गया.

कुल्लु नइसिन् ज़ाईकतुल मौत व ईन्मा तुवइइल अुजुरकुम
यवल् कियामइ इमन् जूइज्जुड अनिन्पारी व
उदजिललज्जन्त इकद इज (१८५) सू. आलेईम्मान (3).

हर शप्स को मौत का मज़ा यजना है और तुम्हें कियामत के दिन अपने अपने आमालों का बदला दिया जायेगा तो जो

कोई दोज़ख से बच गया और जन्नत में दाखिल हो गया तो वह काम्याब हो गया.

प) और फिर आगे ईशाद होता है "व अ.अ.द्द.ल.हुम् अन् रन् करीमा-" मुलाकात के दिन सलामती का वादा कर लेने के बाद अल्लाहतआला इर्माता है के हमनें इन अकिरो के लिये ईजूजत का सवाब तैयार कर रखा है.

द) और आयत के ईब्तेताम पर अल्लाहतआला इन सारी बशारतों का औलान कर ने के बाद नबीअकरीम स.अ. से मुजातिब होकर इर्माते हैं के...

औ नबी बेशक हमने तुम्हें पुशपबरी देने वाले और डर सुनाने वाले और अल्लाह की तरफ उसके हुकम से बुलाने वाले और यिरागे रौशन बनाकर भेजा है तो तुम हमारी इन बशारतों के गवाह रहो और हमने तो बशारते सुना दी मगर तुम (भी जैसे) मोमीनों को पुशपबरी दे दो (जो वक्त की पाबंदी के साथ जिंके कसीर करते रहते हों) के उनके वास्ते अल्लाह की तरफ से बडा इज्जल है

६. जिक से गइलत भरतने का अंजाम

कहीं माल और अवलाह अल्लाह के जिक से गइल ना करदे

जिक का हुकम, जिक का तरीका, जिक के अवकात और जिक के फायदे देखने के बाद आंईये हम गौर करें के जिक से गइलत भरतने वालों के बारे में कुर्आन क्या कहेता है....

सू. मुनाफिकुन ६३- आ. ८ -में अल्लाह तआला इर्माता है

अै ईमानवालो तुमको तुम्हारे अमवाल और तुम्हारी अवलाह अल्लाह के जिक से गइल न करने पायें और जो भी ऐसा करेगा तो जैसे लोग जसारा उठाने वाले हैं.

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِنَّا نُهُكُمُ امَّاوَالِكُمْ وَلَا أَوْلَادِكُمْ
عَنْ ذِكْرِ اللَّهِ وَمَنْ يَفْعَلْ ذَلِكَ فَأَلَيْكَ هُمُ الْخٰسِرُونَ ۝

المنفقون ५३

या अैयुडल्लगीन. आमनू. ला तुल्लिकुम् अमवाल.कुम् वला.
अवलाह.कुम् अन् जिकिल्लाह्, व मै यकअल् जालिक इ.उला-
ईक. हुमुल्फासिरुन.

साडजे तकसीरे हुसैनी ने ईस आयत के तहत ये लिजा है...

“अै ईमानवालों के गिरोह तुम्हारी ज्वाडिशात और न डी तुम्हारे इर्जदों की मुडब्बत तुमको जिकेईलाडी से (दूसरी बातों में) भश्गूल करदेने पाये, क्योँ के ईमान का तकस्र ये है के जुदाअे जुल्जलाल की मुडब्बत तमाम चीजों की दोस्ती पर गइलज रहे और ये (मुडब्बत) ईस कदर (शदीद) डो के

अगर तमाम दुन्या के अम्वाल और आपेरत की सारी नेअमतेँ उस पर पेश की जायें तो कुबूलियत की नजर से किसी को न देखे, और जो शप्स एस (दुन्या का) काम करेगा यानी माल व इरअंद (मैं मशगूल होगा) तो इकतआला से गार्किल हो जायेगा, पस वह गिरोह नुकसान उठाने वाला है के इकीर इानी (यीजों की मुइब्बत) की वजेह् से अजीम बाकी से पीछे रह जायेगा.

२) जिंके इलाही से अेअ्राज करने वालों पर शयतान मसल्लत कर दिया जाता है

सूरे शुब्रूह् ४३- आ. ३५-३७ - में अल्लाहतआला इर्माता है....

और जो शप्स रहमान के जिंक से जानभूज कर अंधा हो जाये तो हम उस पर शयतान को मसल्लत कर देते हैं पस पस वह हर घडी उसके साथ रहेता है. और अल्लता शैतान उन्को रास्ते से डेर देते हैं और समजते ये हैं के वह राह पर है.

وَمَنْ يَعْشُ عَنْ ذِكْرِ الرَّحْمَنِ نُقَيِّضْ لَهُ شَيْطَانًا
فَهُوَ لَهُ قَرِينٌ ۝ وَأَنْهُمْ لَيَصِدُّونَ عَنْ
السَّبِيلِ وَيَحْسَبُونَ أَنَّكُمْ مُّتَدُونٌ ۝ الزخرف ३३

व मैं यअशु अन् जिंकिररहमानि नुकथियज़ लहू शैताना, इहुव लहू करीन (३५) व अन्.हुम् ल.य.सुदू.न.हुम् अनिस्सबीली व यहुस.भू.न. अन्.हुम् मुहत.दून् (३७) सू. शुब्रूह् (४३)

शयतान की बडी कोशिश इन्सान को दुन्या और आपेरत में तबाह करने के लिये ये होती है के अइकामे उलाल और

हराम को, जो उसकी मआशी छंदगी से ताल्लुक रखते हैं और अजाब व सवाब को जो उसकी उपरवी छंदगी से ताल्लुक रखते हैं. भूला दिये जाये. जो ईन्सान मआशमें हलाल और हराम का विहाज रखता है वह वही ईन्सान होता है जिस का दिल जिंके रहमान से गाइल नहीं होता और जब दिल उसका गाइल होजाता है तो उसको हलाल और हराम का ખयाल नहीं रहता और न आपेरत के अजाब व सवाब की उसे कोई परवा होती है. वह शयतान के इंदे में गिरइतार हो जाता है ये ખराबी जिंकुल्लाह से गइलत की वजह से होती है.

उ) जिंक से गइलत भरतने वाला कयामत के दिन अंधा उकाया जायेगा.

सूरे ताहा २० आ १२४-१२५ - में अल्लाहतआला इर्माता है

“और जो शप्स मेरे जिंक से अेअ्राऊ करेगा तो उसके लिये तंगी की छंदगी दरपेश होगी और कयामत के दिन हम उसको अंधा करके उकायेंगे, तो कहेगा अे मेरे रब आपने मुझे अंधा करके क्यों उकाया मैं तो (दुनियाकी छंदगी में) देખनेवाला था तो अल्लाहतआला इर्मायेगा इसी तरह तेरे पास हमारी निशानियां पहूंथी थीं फिर तूने उनकी कुछ परवा न करते हुवे भूला दिया और आज के दिन उसी तरह तू भी भूला दिया जायेगा”

وَمَنْ أَعْرَضَ عَنْ ذِكْرِي فَإِنَّ لَهُ مَعِيشَةً ضَنْكًا

نَحْشُرُهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ أَعْمَى ۝ ۱۲۴ قَالَ رَبِّ لِمَ حَشَرْتَنِي

أَعْمَى وَقَدْ كُنْتُ بَصِيرًا ۝ ۱۲۵ قَالَ كَذَلِكَ أَتَتْكَ

آيَاتُنَا فَنَسِيْتَهَا وَكَذَلِكَ الْيَوْمَ تُنْسَى ۝ ۱۲۶ طه ۲۰

व मैं अअरज़् अन् जिकि इधन्न लहु मधशतन् ऊन्का व
 नहशुरुहु यवल् क्रियामति अअमा, (१२४) काल रब्बि
 लिम. इशरतनी अअमा वकद कुन्त बसीरा, (१२५) काल.
 कआविक अतक आयातूना इ.नसीत.हा व कआविकलयम. तुन्सा.

साहबे तइसीरे हुसैनी ने 'वमन् अअरज़्' के तहुत लिफा
 है के "और जो शप्स अअराज़् करे मेरे जिक् से यानी
 डिद्यत से जो सबब है मुजे याद करने का (तइसीरे हुसैनी
 सफ़ा ३४ नील्द २) इस आयत से ज़ाहिर है के क्या मत
 के दिन अल्लाहतआला जिक् से अअराज़् करने वालों को अंधा
 उठायेगा. पुसुसन जैसे लोगों को जन्हों ने अल्लाह की
 निशानियां (कुर्आन और रसूल) उन तक पहुँचने के बाद
 उनकी परवा नकी और उन्हें भूला दिया-

इसिलिये मडेदी जलीइतुल्लाह ने मोमीनों पर किताबु-
 ल्लाह की ३ से और इतेबाअे रसूलुल्लाह स.अ. में
 'जिकेदवाम' को इर्ज़ किया और 'तलबे दिदारे जुदा' को मोमीन
 का शेवा बताते हुवे कडा के

'हम देपनेवालों का मजहब लाये हैं'

और कडा के

जो यहां का अंधा है वहा वहां का भी अंधा है.

③ जिफुल्लाह ईन्साफ़ नामे से

मोमीन :

भाऊ यारों ने मलेदी से तेड़कीक की है के मोमीन उस्को कहेते हैं, जो सरकी आंभ से, या दिल की आंभ से और या प्वाभ में पुदा को देपता हो और दूसरा वल शप्स जो ये सिइत न रपता हो मगर ईस सिइत की तलभ रपता हो, तो उस पर भी ईमान का हुकम किया है.

तालिब के लिये ईशक इर्ज :

और फिर इर्माया के तालिब के लिये क्या चीज इर्ज है के उस्से पुदा को पडुंये और इर्माया के वल चीज ईशक है और नीज इर्माया के ईशक क्यों कर डालिल होता है तो इर्माया के हुंमेशा दिल को पुदातआला की तरफ़ मुतवज्जहेड रहे, ईस तरड के दिल में कोई चीज न आये, और ईस बात के लिये हुंमेशा जिल्वत ईप्तेयार करे और किसी के साथ मशगुल नहो, न साथ यार के और न साथ अग्यार के, डर डालत में डक का मुलाडिआ करे (दिजे) जडे हुवे, लेटे हुवे, और जाने पीने के वक्त, डर डालत में डक का मुलाडिआ करे

मानिंटे कौलुल्लाही त्आला....

“फिर जब तुम नमाज से इरिग हो जाओ तो जडे और बैठे और बैठे डर डाल में अल्लाह का जिक करते रहो”.

فَإِذَا قَضَيْتُمُ الصَّلَاةَ فَادْكُرُوا اللَّهَ

۱۰۳
قِيَامًا وَقُعُودًا وَعَلَىٰ جُنُوبِكُمْ..... النساء १०३

“इष्टञ्ज कञ्जैतुमुस्सत्तात इज्जकुत्तल्लाह कियामंक् व कुत्तिदंक् व अत्ता नुनूत्तिकुम्” सुरे निसाअ आयात नं. १०३.

जिक रिसालअे भक्किया से

इर्माया अल्लाह त्आला ने.....

“तुम अपने ज्मे अपने रब् को आञ्जिज्ज से और पोशीदा तौर पर बगैर पुकार कर केहने के सुब्ह शाम याद करो और ग्गदिलों से मत हो जाना”

وَاذْكُرْ رَبَّكَ فِي نَفْسِكَ تَضَرُّعًا وَخِيفَةً وَدُونَ
الْجَهْرِ مِنَ الْقَوْلِ بِالْغُدُوِّ وَالْآصَالِ وَلَا تَكُنْ

مِّنَ الْغَافِلِينَ ۝ الْاعْرَافِ

वज्जुक्कुर् रब्ब.क. ई नक्किसि.क. तज्जर्अंक् व भीक्कतंक् व दूनल् ज्जरि मिनल् कौलि बिल्गुदुव्वि वल्आसालि वला. तकुम् मिनल्गदिलीन् (२०५) सू. अअराक् (७)

जिक के शरायत और तरीका

- अकिर वुज्जू और गुस्ल और तहारते बदनी और कपड़ों की तहारत और मकामे जिक की तहारत अच्छी तरहा करे.
- चार जानू डोकर र्ज्ब किब्ला अपने दोनों हाथ जानू पर रब्बे हुवे बैठे या अपनी सीधी हथेली और सीधे अंगुठे के बातिनी हिस्से से बायें हाथ की पीठ को पकडे, जैसा के नमाज में नबी (स.अ.) का अमल था और हुज्जुरे कल्ब से, अपनी आवाज की हिक्ज्जत करते हुवे दोनों आंजों को बंध किये हुवे 'लाईलाहा ईल्लल्लाह' केहता जाअे और

लाईलाहा को सप्त कुवत के साथ जाविस दिल से अपने दिल के कुल तआल्लुकात को कताअ करके तमाम अख्शे बुरे वारदाते इल्मी की नही करते हुअे निकाले.

जिकका हासिल पुजुद में अल्लाह के सिवा कोई और नहीं है

- और 'ईल्लल्लाह' को सप्त कुवत से दिली तवज्जोह को पुदा की तरफ़ कायम करके अपने दिल में दाखिल करे ताके मानीअे जिक का माहासिल ये हो के पुजुद में अल्लाह के सिवाअे कोई और नहीं है.
- दिली मुराकेबा करते हुवे जिक पर मुदावमत और मुवाजेहत करे और जिक के आदाब ये है के अपने तमाम अवकात में जिके इब्नीब में ईस तरह मुस्तग्रक हो के ज्बानोदिल जिक और मानाअे जिक से जाली न रहे, उता के अकिर, मजकूर में इना होकर मुशाहेद अे मजकूर के मानेअ जो पदें हैं वह ठीठ जायें.

जिके दवाम इर्ज

- मुसलमान 'मर्दों और औरतों पर अल्लाहतआला का जिक इर्जे दवाम है यूनांये अल्लाहतआला इर्माता है.....

“मला वह शप्स जस्का सीना जोल दिया अल्लाह ने ईस्लाम के लिये पस वह अपने परवरदिगार की जानिब से नूर पर है (कहीं सप्त दिल बराबर हो सकता है) तो उलाकत है उनके लिये जिन् के दिल सप्त हो गये हैं, अल्लाह के जिक को छोडकर ये लोग् पुवी गुमराही में हैं” (२२)

सू. जुमर (३८)

أَفَمَنْ شَرَحَ اللَّهُ صَدْرَهُ لِلْإِسْلَامِ فَهُوَ
 عَلَى نُورٍ مِّنْ رَبِّهِ فَوَيْلٌ لِلْقَاسِيَةِ قُلُوبُهُمْ
 مِّنْ ذِكْرِ اللَّهِ أُولَئِكَ فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ۝ الزمر ٣٩

अक. मन् शर.ह.ल्लाहु सद्रहु विल्हस्लामि इहुव
 अला नूरिम् मिर्ब्बिही, इ.वैलुल् विल्क़सि.य.ति कुलू.
 बुहुम् मिन् जिक्किल्लाहि, उवाहक. ई ज़लालिम् मुभीन्

● और अल्लाह तआला ने दिल की सप्ती काफ़िरो और मुनाफ़िकों की सिफ़त बताई है और अल्लाह से सभ से ज़यादा दूर वह आदमी होता है जिसका दिल सप्त होता है... मानिन्द कौलुल्लाहित् आला के....

क्या वक़्त नहीं आया मोमिनों के ख़िये इस बात का के उनके दिल आज़िज़ करें अल्लाह के ज़िक्र के वक़्त और उस चीज़के ज़िक्रके वक़्त जो नाज़िब हुवा अग्रे इक़ और उन लोगों की तरफ़ न हों जिसकी किताब अता हुई थी, इससे फेडवे, फिर उन पर दराज़ हो ग़र्ह मुहदत तो उनके दिल सप्त हो गये और जोड़ते उनमें कासिक हें(१६)

सू.हदीद (५८)

أَلَمْ يَأْنِ لِلَّذِينَ آمَنُوا أَنْ تَخْشَعَ قُلُوبُهُمْ
 لِذِكْرِ اللَّهِ وَمَا نَزَلَ مِنَ الْحَقِّ وَلَا يَكُونُوا
 كَالَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ مِنْ قَبْلُ فَطَالَ عَلَيْهِمُ
 الْأَمَدُ فَقَسَتْ قُلُوبُهُمْ وَكثيرٌ مِنْهُمْ فَسِقُونَ ۝ الحديد ٥٤

अल.म् यअनि विल्लजीन. आमनू. अन्तप्श.अ. कुलूबुडुम्
 विजिकिल्लाडि व.मा. न.ज.ल. मिन.ल् इकि व.ला. य.कून्.
 क.ल्ल.जीन. उतुल्लिताब.मिन् क्कल्लु.इत्त.ल. अल्लिमुल् अ.म.हु
 इ.क.स.त् कुलूबुडुम्, व कसीरुम् मिन्दुम् इंसिकून् (१६)

(ईस आयत में ईशारा है मोमीनों के लिये के वो आञ्जु के साथ अल्लाह के जिक की तरफ़ माँल हों, और जब उन्हें किताबुल्लाह की आयतें पढपढकर सुनाई जायें तो तवज्जो से नर्मदिल होकर उसे सूने और उसपर गौरो झिंक करें और तंभीअन् कडा गया है के उन अहले किताब की तरह न हो जाना जिन पर मुददतें दराज हो गई तो उनके दिल सप्त हो गये (अल्लाह के जिक को छोडकर) और वह ग़ाफ़िल हो गये और उनका शुमार इंसिकों में हो गया.

.... और इकतआलाने जहां कहीं ग़फ़लत का जिक इर्माया है काफ़िरो के लिये, काफ़िरो के इक में इर्माया है... बल्के ग़फ़लत काफ़िरो की सिइत है और मुस्तुफ़ा को मना इर्माया के "अै मुहंमद (स.अ.) ग़ाफ़िलों से मत हो" 'वला तकुम्मीन ल्गाफ़िलीन्' सु. अअराइ (२०५)

कुव्वते शदीद से जिक करना याडिये

- और ईस्में ईशारा है ईस बात की तरफ़ के बंदा कुव्वते शदीद से जिक करे क्यों के अल्लाहतआला ने दिल को सप्त की सिइत से जिक इर्माया है और सप्त पत्थर की सिइत है.

जैसाके इर्माया अल्लाहतआलाने.....

"किर ईस्के बाद तुम्हारे दिल सप्त हो गये और वह मानिंद पत्थर के हो गये बल्के उन्से भी जथादा सप्त"

सु.बकरह (२) आयत नं. (७४)

और पत्थर जबभी सप्त हो तो सप्त मार से ही टूटता है और वह मार भी किसी सप्त धुन की ही होनी चाहिए.

जिक से ग़ाइल लोगों पर अल्लाह शयतान मुक़रर कर देता है इर्माया अल्लाहतआला ने.....

“जो आदमी जिके जुदा से ग़ाइल होकर ज़ुंदगी करे तो हम उसके लिये शैतान मुक़रर कर देते हैं और वह उसके साथ रहता है (उसका हमनशीं हो जाता है) और अलबत्ता शैतान उनको रास्ते से डेर देते हैं और समजते ये हैं के वह राह पर है.”

وَمَنْ يَعْشُ عَنْ ذِكْرِ الرَّحْمَنِ نُقَيِّضْ لَهُ شَيْطَانًا
فَهُوَ لَهُ قَرِينٌ ۝ وَأَنْهُمْ لَيَصِدُّونَهُمْ عَنِ
السَّبِيلِ وَيَحْسَبُونَ أَنَّكُمْ مُّهْتَدُونَ ۝ الزخرف ३३

व मंयु यअशु अन् जिकिररह्मानि नुक्थियज़ लहू शयतानन्
इ.हुव. लहू क़रीन् (३६) व अन्न लुम् ल.य.सुदू.न.लुम्
अनिस्सभीली व यइस.भू.न. अन्न.लुम् मुहत.दू.न् (३७)
सू.जुपुइ (४३)

इर्माया नबी (स.अ.) ने शैतान ईन्सान के दिल पर अपना सीना रफ़्मा हुवा होता है, पर जब वो अल्लाहतआला का जिक करता है तो पीछे हठ जाता है और मुंह डेर लेता है और जब उसका दिल जिक से ग़ाइल होता है तो उसमें उसकी आरजूओं को पैदा कर देता है.

और जो लोग अल्लाह के जिक से ग़ाइल रहते हैं उनके

विश्वे नीज अल्लाह तआला इर्माता है....

उन पर काबु कर लिया है शैतान ने, पस उन्को भूवा दिया
अल्लाह के जिक्र को, ये शैतानी गिरोह है, जबरदार हो
जाओ, बेशक शैतानी गिरोह वही घाटा पानेवाले है.

اسْتَحْوَذَ عَلَيْهِمُ الشَّيْطَانُ فَأَنسَاهُمْ ذِكْرَ اللَّهِ
أُولَئِكَ حِزْبُ الشَّيْطَانِ إِلَّا إِنَّا حِزْبُ الشَّيْطَانِ
هُمُ الْخَسِرُونَ ۝ المجادلة ٥٨

ईस्तह्व.ज. अ.लै. डिभुशयतानु इ.अ-साहुम्
जिकरिल्लाहि उलाईक. डिज्भुशयतानि, अला
ईन्न. डिज्भ.शयतानि. हुमुल्मासिइन् (१८)
सू.मुजादिलइ (५७)

● तस्दीक के अवाँल जमाने में 'लाईलाहा ईल्लल्लाह' का
काईल चार चीजोंका मोलताज होता है.

(१) तस्दीक (२) तअज़ीम (३) इलावत और (४) हुर्मत
ज्जस्को तस्दीक हासिल होती है तो वह 'लाईलाहा
ईल्लल्लाह' कहेने में सख्या होता है और सख्ये में पुढ
पसंटी का माद्दा नहीं होता. पस काईल को यादिश्वे के
लाईलाहा कहेने के वकत अपने पुजूद की नई करे ताके
अपने झौल में सख्या हो. और सालेकीन के मज्जल्ल में
'लाईलाहा' के मानी मौजूदात में से कोई पुजूद नहीं है के है.

१. तस्दीक

● कुल अश्या का तआल्लुक काईल के पुजूद से होता है. जब

काँल अपने वुजूद की नई करे तो किसी शय का असर
बाकी नहीं रहेगा और इसको तस्दीक कहेते हैं

... इसको तस्दीक न हो वो मुनाफिक है. क्योंकि वह सिर्फ
जबान से काँल है. उसके दिल में कुछ भी नहीं है. और
आयत, "और बाज़ लोग ऐसे भी हैं जो कहेते हैं हम
ईमान लाये अल्लाह पर और क्यामत के दिन पर, और
हर अरब वह मोमीन नहीं हैं (सु.भकरह (२) आयत नं. ८)
ईस अम्र पर दलावत करती है के वह दिल में अल्लाह
और आभेरत पर ईमान लाने की तकज़ीब करते हैं.

२. तअज़ीम

- काँल पर वाज्जब है के जब मौजूदात से कोई वुजूद नहीं
है, कहेतो इक को साबित करे ताके उसकी तअज़ीम हो,
जैसा के अल्लाहतआला ने अपने कौल 'कुल शैथन हलिकु
ईल्ला वज्जदीयू' में अपनी तअज़ीम का ईज्जार इर्माया है.
क्यों के कुल को इनी समझने के बाद इक को साबित
समझना इक की तअज़ीम करना है.

... और जो मासिवा अल्लाह की नई के बाद वहदानियत
को साबित न करे तो वह बिदती है, क्यों के उससे वह
जात अहिर डूँठ जो रसूलुल्लाह से अहिर न डूँठ बल्के
रसूलुल्लाह तो वहदानियत के साबित करने में कामिल है,
हत्ता के इर्माया के 'मैं अइमद बिलामीम हुं'... यानी मैं
अइद हुं (आंइज्जत तौहिद में ईस कहर कामिल थे के
अपनी हस्ती की नई इर्मादी और उसको अइद से ही
तअज़ीर इर्माई) और इसी हदीस से तअज़ीमे मज्कूर
समझ में आती है और इसको ये दालत हलसिल न हो
तो वह बिदती है.

३. इलावत

- यूनांये फ़ाईल जब मासिवा अल्लाह की नहीं करे और इक को साबित करे तो उसको वाज्जब है के यकीन करे के उससे वली मुतकल्लीम होता है. ये भी कबा गया है के मज्जूर में जब अकिर अपनी नहीं करे तो बजाये अकिर के मज्जूर ही रह जायेगा और जबये हालत हासिल होतो फ़ाईल को इलावत मिलेगी जैसा के यादिये

.... और उसको इलावत हासिल न हो तो वह रियाकार है, यानी उसने 'लाईलाहा ईल्लल्लाह' कहेते हुवे बसारेते इक से इक को न देया तो वह रियाकार है क्यों के वह 'लाईलाहा ईल्लल्लाह' कहेते हुवे अपने नकस को देण रहा है. जैसे आदमी को जिक की इलावत नहीं मिल सकती और रियाकारी शिके नहीं है, जो जिक की इलावत से दूर डाल देती है, मानिंटे कौबुल्लाहीतआला "न शरीक करे अपने रबकी ईबाहत में किसी को"

४. डुरमत

- फ़ाईल को यादिये के बयकीने तमाम ईस अत्र को जाने के इक के सिवाये कोई सामेअ नहीं है. क्यों के जिक कदीम है जो हादिसे समाअत से सुना नहीं जाता. यूनांये कलामे कुद्सी में है "इंमेशा बंदा नकिल ईबाहत से मेरे नज्दीक होता है (यहां नकिल ईबाहत के मानी जालीस बंदगी के है) इत्ता के में उसके कान, उसकी आंज, उसकी ज्बान, उसका हाथ या पांव बन जाता हुं" उसको ये बात हासिल हो जाये तो वह इहे डुरमत की डिहाजत कर सकता है.

.... और उसको डुरमत हासिल न हो तो वह हासिक है, यानी जो आदमी 'लाईलाहा ईल्लल्लाह' कहेने के वकत ये न समजे के इक के सिवाये दूसरा सामेअ नहीं है तो वह हासिक है और उसको ऐसा यकीन न हो के अल्लाह ही सामेअ है और उससे अल्लाह ही मुतकल्लीम है तो वह

કે તબ્કે સે ખારિજ હૈ, ગોયા કે વહ મકામે વહદાનિયત કે દાવે મેં ઝૂઠા હૈ.

- ઔર જાનો કે તાઅત મસ્લન નમાજ જકાત ઔર હજ વગૈરા કભી ઈનસે ભી રિયા મીલ જાતી હૈ ઔર સદકે મેં શુબ્હાત આ જાતે હૈ, લેકિન કલ્મએ 'લાઈલાહા ઈલ્લાહ' કા ઝિક મોમીન ખુલૂસેદિલ સે હી કરતા હૈ ઔર ઈસ્મે ઈખ્લાસ મૌજુદ રહતા હૈ, લિહાજા ઝાકિર કેલિયે ઈખ્લાસ વાજીબ હૈ. અગર બગૈર ઈખ્લાસ કે કહેગા તો મોમીન ન રહેગા ઔર ન તો આખેરત કે અજાબ સે નજાત પાવેગા.

માનિંદ કૌલુલ્લાહિતઆલા કે.....

“ફઅબુદિલ્લાહ. મુખ્વિસ.લ્લહુદીન્ (ર) અલા. લિલ્લાહિદીનુલખાલિસૂ”....

સૂ. જૂમર (૩૯)

યાને અલ્લાહ કી ઈબાદત કરો ખાલિસ કર કે વાસ્તે ઉસ્કે ઈબાદત બેશક ઈબાદત ખાલિસ અલ્લાહ કે લિયે હી હૈ

- ઔર કૌલુલ્લાહીતઆલા.....

‘કહે દે કે મેરી નમાજ ઔર સબ ઈબાદતેં ઔર મેરા જીના ઔર મરના સબ અલ્લાહ કે લિયે હૈ જો સારે જહાં કા પરવરદિગાર હૈ, કોઈ ઉસ્કા શરીક નહીં ઔર ઈસી તૌહિદ કા મુઝકો હુકમ હુવા હૈ ઔર મેં સબસે પહલા મુસલમાન હું.’ ઈસ આયત સે ભી માલૂમ હોતા હૈ કે સારી ઈબાદતેં ખાલિસ અલ્લાહ હી કે વાસ્તે હોની ચાહિયે....

قُلْ إِنِّي صَلَاتِي وَمَحْيَايَ وَمَمَاتِي لِلَّهِ

رَبِّ الْعَالَمِينَ ۝ لَا شَرِيكَ لَهُ ۝ وَبِذَلِكَ أُمِرْتُ

وَأَنَا أَوَّلُ الْمُسْلِمِينَ ۝ الْإِنشَاء ۶

કુલ્ ઈન્નિ સ.લાતી વ નુસુકી વ મહા.ય વ મ.માતી લિલ્લાહી
રબ્બિલ્આલ.મીન્ (૧૬૩) લા શરીક. લહૂ વ બિઝાલિક. ઉમિતુ
વ અના. અવ્વલુલ્મુસ્લિમીન્. (૧૨૪) સૂ. અનુઆમ (૬)

- ફર્માયા નબી (સ.અ.) ને કે,
જો શખ્સ 'લાઈલાહા ઈલ્લલ્લાહ' યકીને ખાલિસા સે કહેગા
તો જન્નત મેં બગૈર હિસાબ વ અઝાબ કે દાખિલ હોગા.
- નીજ નકલ હૈ કે હઝરત મેહદી (અ.સ.) ને ફર્માયા કે
કલ્મએ લાઈલાહા ઈલ્લલ્લાહ કી ચાર કિસ્મેં હૈં.
૧) લાઈલાહા ઈલ્લલ્લાહ 'ગુફતની' પાની મેં પત્થર.
૨) લાઈલાહા ઈલ્લલ્લાહ 'દાનિસ્તની' (ઈલ્મુલ્યકીન) આગ મેં પત્થર.
૩) લાઈલાહા ઈલ્લલ્લાહ 'ચશીદની' (ઐનુલ્યકીન) આગ મેં શમા.
૪) લાઈલાહા ઈલ્લલ્લાહ 'શુદની' (હકકુલ્યકીન) આગ મેં નાલ.
- દાનિસ્તની, ચશીદની ઓર શુદની યે તીનોં મરતબે તમામ
અંબિયા ઓર ઓલિયા રખતે હૈં - યાને ઈલ્મુલ્યકીન,
ઐનુલ્યકીન ઓર હકકુલ્યકીન ઓર એક કિસ્મ જો લાઈલાહા
ઈલ્લલ્લાહ 'ગુફતની' કી હૈ વહ મુનાફિકોં કી સિફત હૈ.
- મગર તાલિબે સાદિક જો અપને દિલ કે રૂખ કો ગૈરેહક
સે ફેર લિયા હૈ ઓર અપને દિલ કે રૂખ કો ખુદા કી
તરફ લાયા હૈ ઓર હંમેશા ખુદા કે સાથ મશગુલ રહેતા
હૈ, દુનિયા ઓર ખલક સે ઉજલત ઈપ્તેયાર કિયા હૈ ઓર
ખુદ સે બાહિર આને કી હિમ્મત કરતા હૈ એસે શખ્સ પર
ભી ઈમાન કા હુકમ કિયે હૈં.
- ઈમાન યે હૈ ભાઈ, કે મોમીન કો ચાહિયે કે 'લાઈલાહા
ઈલ્લલ્લાહ' કેહને કે મુકામ મેં 'લાઈલાહા ઈલ્લલ્લાહ' કે
માની કા ધ્યાન રખ્ખે. યાની જૈસા કે લાઈલાહા ઈલ્લલ્લાહ
કા કાઈલ હુવા હૈ ઉસી તરહ લાઈલાહા.... કા દાના હો

જાએ. ઔર જબ લાઈલાહા કા દાનાહુવા હે તો જાયજ હે કે લાઈલાહા ઈલ્લલાહ કા બીના હો જાએ ઔર જો શખ્સ લાઈલાહા ઈલ્લલાહ કા બીના હોતા હે, હેરત વ તબાહી મેં પળતા હે, કહને, સમજને ઔર જાનને સે બાજ રહેતા હે. પસ ન ઈલ્મ રહેતા હે, ન હુસ્ન, ન શૌક રહેતા હે, ન ઊન્સ...

- ઔર લાઈલાહા ઈલ્લલાહ કે કલ્મે મેં ઊસ માબુદ કી નફી કરના હે જો ખુદાતઆલા કે સિવાયે હે.
- નીજ નકલ હે કે હ. મહેદી (અ.સ.) ને ફર્માયા કે લાઈલાહા... કિસી કે દિલ પર ઈત્ની મિકદાર ઠહેર જાએ (જીસ તરહ કે) કોઈ શખ્સ મૂંગ કા દાના ગાય કે સિંગ પર ડાલે ઔર આવાજ કરે, ઊસ્કા કામ તમામ હો જાએ.
- ઔર નીજ નકલ હે હ.મહેદી (અ.સ.) ને ફર્માયા કે અગર 'લાઈલાહા ઈલ્લલાહ' મોમીન કે દિલ પર ઈસ કદર ઠહેર જાએ જૈસા કે એક ઘર રૂઈ સે ભરા હુવા હો, વહાં એક ચિંગારી ડાલ દી જાએ ઔર ઊસી વકત નિકાલ લી જાએ તો ઊસ જગહ કે વહ ચિંગારી ડાલી જાતી હે વહ જગેહ જલ જાતી હે. લાઈલાહા ઈલ્લલાહ કી સિફત ઐસી હે કે ગૈરુલ્લાહ કી સારી મહોબ્બતોં કો જલા દેતી હે.
- હમ પર અફ્સોસ હે કે હમારી તમામ ઉમ્ર મેં એક બાર ભી ઐસા ન હુવા કે હમારે દિલ પર લાઈલાહા ઈલ્લલાહ ઈત્ની મિકદાર ઠહેર જાએ.
- ફર્માને ખુદા હે કે.....

“જબ નમાજ અદા કર દી જાએ તો જમીન પર (મસ્જીદ મેં) ફેલ જાઓ. ઔર અલ્લાહ કે ફજલ કો ચાહો (અલ્લાહ કી બીનાઈ કો ચાહો) ઔર અલ્લાહ

का जिंके कसीर करो. शायद तुम (कुर्बेँ धलाही छामिल करने में) काम्याब हो सको. और जब वह किसी तिजारत या लखव को देणते हैं तो उस पर तूट पणते हैं या तुम्हें ढडा छोड देते हैं. कलदो के अल्लाह के पास लखव और तिजारत कोई ठिम्दा चीज नहीं और अल्लाह सबसे बेहतरे रिजक देनेवाला है. (१०)

सू. जुमा (६२)

فَإِذَا قُضِيَتِ الصَّلَاةُ فَانْتَشِرُوا فِي الْأَرْضِ
وَابْتَغُوا مِنْ فَضْلِ اللَّهِ وَاذْكُرُوا اللَّهَ كَثِيرًا
لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ۝ الْجُمُعَةُ ٤٢

इधआ कुज़िय.तिस्सलातु इन्तशिर् इल्अर्रि वण्त.गू मिन् इज़्लिल्लाहि वज़्ज़ुरुल्लाह कसीरल् ल.अ.ल्लकुम तुइलिहून

● और इमनि पुदा....

अल्लाह आस्मानों और जमीन का नूर है, उसके नूर की मिसाल अेक ताकये की है, ज्जस्में यराग है और यराग अेक शीशे में है, शीशा अैसा है गोया के वहयमकता हुवा तारा है, वह यराग रौशन किया जाता है, जैतुन के अेक मुभारक दरण्त से, जो न मश्रीक में है और न मगरीब में, करीब है के उस दरण्त का तेल रौशन होवे अगरये उसको आग न ली छुंअे तो, नुरुन अलानूर होगया. अल्लाह ज्जुस्को याहता है, अपने नूर का रास्ता बता देता है, और अल्लाह लोगों के शायदे के लिये मिसालें बयान करता है और अल्लाह हर चीज को जानने वाला है (उप) (और वह यराग रौशन होता है...) अैसे घरों में के अल्लाह ने हुकम दिया है उन्के

दुरस्त करने का और ईस्का के वहा ठिस्का नाम दिया
 जाये, ठिस्में तस्बीह करते रहते हैं, सुब्होशाम औसे
 लोग ज्को नही गाइल करती सौदागरी और न
 भरीदो इरीफ अल्लाह के जिक से (३६) सू. नूर. (२४).

اللَّهُ نُورُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ مِثْلُ نُورِهِ كَمِشْكَاةٍ
 فِيهَا مِصْبَاحٌ الْمِصْبَاحُ فِي زُجَاجَةٍ الزُّجَاجَةُ
 كَأَنَّهَا كَوْكَبٌ دُرِّيٌّ يُوقَدُ مِنْ شَجَرَةٍ مُبَارَكَةٍ
 زَيْتُونَةٍ شَرْقِيَّةٍ وَأَغْرِبِيَّةٍ يَكَادُ زَيْتَايْنِ
 وَلَوْلَمْ تَمْسَسْهُ نَارٌ نُورٌ عَلَى نُورٍ يَهْدِي اللَّهُ
 لِنُورِهِ مَنْ يَشَاءُ وَيَضْرِبُ اللَّهُ الْأَمْثَالَ لِلنَّاسِ
 وَاللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ۝^{३५} فِي بُيُوتِ الَّذِينَ
 أَنْ تَرْفَعَ وَيُذَكِّرَ فِيهَا اسْمَهُ يُسَبِّحُ لَهُ فِيهَا
 بِالْغُدُوِّ وَالْآصَالِ ۝^{३५} رِجَالٌ لَا تُلْهِيهِمْ تِجَارَةٌ وَلَا بَيْعٌ

عَنْ ذِكْرِ اللَّهِ ۝^{३५} النور २२

अल्लाहु नुरस्समावाति वल्लअर्र्, मस.लु नूरिसि कमिशकतिन्
 हीहा मिस्बाहुन्, अल्मिस्बाहु ही जूजाजतिन्,
 अज्जुजाजतु, क.अ.नहा कल.लुन् दुरियुंयू यूक.हु
 मिन् श.ज.र.तिम् मुबार.क.तिन् जैतून.तिल् लाशकिध्तिव्
 वला गलिध्तिव् यकाहु जैतुहा युजीउ वलव् लम्

तस्सस्सु चार, नूरन् अलानूर, यद्दिल्लाहु विनूरिडी
 मेंयशाअ, वयज़रिबुल्लाहुअम्साल. विन्नास, वल्लाहु
 बिकुल्ली शैधन् अलीम (उप) की बुयूतिन् अजिनल्लाहु
 अन् तुर्क.अ. वयुज़्क.र. डीहस्मुहू-युसब्बिहु लहु डीहा
 बिल्लुहुवि वल्आसालि (उ६) रिजालुल् ला तुल्लीडिम्
 तिज्जार.तूव् वला बैउन् अन् जिक्किल्लाह.... (उ७)

सू. नूर. (२४)

★★★ (यहां इस आयत में अल्लाह तआला इर्माता है के अल्लाह जोसे यादता है अपने नूर का रास्ता बता देता है और वह अपने नूरका रास्ता उन लोगों को बता देता है और अपने नूर के यराग को जोस्की मिसाल उपर की आयत में बयान की गई है, उन घरों में रौशन करता है, उन घरों में सुब्बोशाम अल्लाह का जिक् करते हैं जैसे लोग जन्हे सौदागरी और परीदोइरोप्त जिक्ल्लाह से गाइल नहीं करती.

और इस आयत में अल्लाह ने अपने नूर की मिसाल बताई है, उससे मुराद सैयदे कायेनात, रेहमते आलम, ह.सैयद मुहंमद मुस्तुफा स.अ.व. है.... हज़रत एब्ने उमर र.अ. से मरवी है के ताक (रौशनदान) तो सैयदे आलम स.अ.व. का सीना मुबारक है और शीशा (कंदील - इनुस) आपका कल्बे अतहर है और यराग वह नूर है जो अल्लाह तआला ने उसमें रज्जा है के न शरकी है, न ग़रबी (न यहुदी न नसरानी) अक दरप्ते मुबारक से रौशन है, वह दरप्त हज़रत एब्ब्राहीम अ.स. है, और नूरेकल्बे एब्ब्राहीम पर नूरे मुहंमदी नूर पर नूर है (तइसीर - कन्जुल एमान)

....और ये नूरे मुहंमदी उन घरों में और उन लोगों के दिलों में रौशन होता है जो सुब्बो शाम अल्लाह का नाम लेते हैं और जिक्ल्लाह में लगे रहते हैं और जन्हे सौदागरी

और परीछो इरोप्त अल्लाह के जिक से गाइल नहीं करती.

ईसीविये जातिमे विलायते मुहंमदी, उ. सैयद मुहंमद महेदीये मौउिद, जलीइतुल्लाह ने कुर्आन की ३ से अल्लाह के हुकम से अपने मानने वालों पर जिके दवाम' और 'तलबे दिदारे जुदा' को इर्र किया और उन्हे जिके जईकी तालीम दी, वह जिके जई' जो बारे अमानत के तौर पर रसूले जुदाने ज्वाजा जिजर (अ.स.) को सोंपा था और उ.ज्वाजा जिजर ने आपके जदे अमजद उ. मुहंमद मुस्तुफा की ये अमानत आपको जोजरी मस्जिद में सोंपी थी, उस जिके जई के जरीये आपने उम्मते मुहंमदीया को इस काबिल बना दिया के वह इनाइश्शैज, इनाइरिसूल और इनाइल्लाह डोकर सरकी आंजो से इस दारे दुन्या में अल्लाह का दिदार कर सके और यहां देजकर वहां (आजेरतमें) पड़ेयान सके... मानिंद कौलुल्लाहीतआला के..... "वमन् कान - ई डजि ही अअ्मा इ. हुव - ईलुआजिरती अअ्मा". याने जो कोछ यहां का अंधा है वह आजेरत का भी अंधा है

وَمَنْ كَانَ فِي هَذِهِ أَعْمَىٰ فَهُوَ فِي الْآخِرَةِ أَعْمَىٰ

وَأَضَلُّ سَبِيلًا ۝ بِنِ اسْرَائِيلَ ۱۷

..... और उम्मते मुहंमदीया को पुसुसन और अवामुन्नास को उमूमन दावत दी के....

"जो कोछ याइता है के अपने रबका दिदार करे उसे याइये के अमले सालेड (तर्कदुन्या) करे और अपने रबकी बंदगी में किसीको शरीक न करे"

فَمَنْ كَانَ يَرْجُوا لِقَاءَ رَبِّهِ فَلْيَعْمَلْ عَمَلًا صَالِحًا
وَلَا يُشْرِكْ بِعِبَادَةِ رَبِّهِ أَحَدًا ۝

इमन् कान यर्जू लिक्ताअ. रब्बिही इत्यअमल्
अ.म.लन् साविहंक् वला युशरिक् बिर्हबाद.ति
रब्बिही अ.इ.दा (११०) सू.कडक (१८).

...और ये दावत देकर आपने अपनी आतको उस आयत का
मिस्दाक बना लिया जोस्में अल्लाह तआला इर्माता है के....

“केह दो औ मुहंमद ये मेरा रास्ता है, बुलाता हुं
अल्लाह की तरफ उस्के दिहार के लिये (उस्की बसीरत पर,
भारेकत पर) में और मेरा ताअअताम और अल्लाह पाक
है (शिरक से) और में मुशरीकीन में से नहीं हूं (१०८)
सू.युसुफ (१२)

قُلْ هَذِهِ سَبِيلِي أَدْعُوا إِلَى اللَّهِ عَلَىٰ بَصِيرَةٍ
أَنَا وَمَنِ اتَّبَعَنِي وَسُبْحَانَ اللَّهِ وَمَا أَنَا مِنَ الْمُشْرِكِينَ ۝
(يوسف ١٢)

- उदीस नबी ने इर्माया के लाईलाहा ईल्लल्लाह का जिंक
ईमान को ऐसा उगाता है जैसा के पानी तरकारी को.
- कौन ये कर सकता है के अपने पार से दिल उटावे,
मगर वहीशप्स जो पत्थर से जयादा सफ़ दिल रभता है.
- जब तक तु 'ला' की आहु से रास्ता साइ न करे,

‘ईल्लाह’ के मल्ल में क्योकर पळूंये.

- और अल्लाह पाक इर्माता है के.....

“जो मेरे जिक् से मुंड डेरे तो उसके लिये तंग मर्शत (रोज) डोगी और कयामत के दिन हम उसको अंधा उठायेंगे, कहेगा ऐ मेरे रब तूने मुझे अंधा करके क्यो उठायो मैं तो बीना था. तो इर्मायेगा के कया युं डी तेरे पास डमारी आयते आँ थीं जो तू भूल गया और ईसी तरड आज तू भूला जायेगा.”

(सू. ताहा (२०) आयत १२४-१२५)

- कलामे कुदसी है ऐ आदम के बेटे तू मेरी ईबादत के लिये वकई डोजा, मैं तेरे सीने को तवंगरी से भर दूंगा और तेरी मोडताज को बंद कर दूंगा और अगर तू मेरी ईबादत नहीं करेगा तो तेरे डाय को शुगल से भर दूंगा और तेरे इक् को बंद नहीं करूंगा.
- इर्माया नबीने “ईन्सान की सांसे गीनी डूँ है, जो सांस बगैर यादे ईलाडी के निकलती है वड मुर्दा है”.
- कहेते हैं के आदमी के वजूद में दिन और रात में २४,००० बार सांस चलती है.
- पस मुर्दगी की सिइत मोमीन मे नहीं डोनी याडीये. नबी (स.अ.) ने इर्माया.....
“सुनो, तेडकीक के अवलिया अल्लाह भरते नहीं, बडके अक घर से दुसरे घर मुत्तकिल डोते हैं.”
- ये मुर्दगी की सिइत काइरों के जुमरे से है. यूनांये अल्लाहतआला इर्माता है के, “तु नहीं सूना सकता मुर्दा को और नहीं सूना सकता बडेरों को पूकारना जब के वड रूगर्दानी करे मुंड डेरे कर”.

- भुदा के इर्मान और इर्माने रसुलुल्लाह से मालुम हुवा के अगर अेक सांस भी बगैर जिक्र के जाये तो वह शप्स मुर्दा है और उसको गाइल केल सकते हैं..... मानिंटे कौलुल्लाहीतआला..

“और अपने परवरदिगार का जिक्र करते रहो अपने ज् में गिडगिडाते हुवे और भौक के साथ और बेआवाज निकले ज्बान से (आवाज के बगैर याने सांसों में) सुब्द और शाम और गाइलों में से मत डोजाना”.

सु.अअराक (७) आ. (२०५)

- और डकतूआला ने जहां कहीं गइलत का जिक्र इर्माया है, काइरों कके डक में इर्माया है... बडे गइलत काइरों की सिइत है और मुस्तुइ (स.अ.) को मना इर्माया के अे मुहंमद... गाइलों से मत डो, पस डुमारे लिये क्यो कर रवां डो सकता है के गइलत में रहे. पस अगर गइलत है तो इर्मान की सिइत कहां रही, पस ये गइलत दोज्भ में ले जायेगी.

- यूनांये अल्लाहतूआला ने इर्माया

“और डमने पैदा किये हैं ज्दन्नम के लिये जोडतेरे ज्न और इन्सान, उन्के दिल हैं उन्से समजते नहीं, और उन्की आंभे हैं के उन्से देખते नहीं, और उन्के कान हैं के उन्से सून्ते नहीं, वह मानिंटे यार पायों के है बडे उन्से भी ज्यादा गुमराड हैं, वही लोग गाइल हैं”.

وَلَقَدْ ذَرَأْنَا لِجَهَنَّمَ كَثِيرًا مِّنَ الْجِنِّ وَالْإِنسِ
 لَهُمْ قُلُوبٌ لَا يَفْقَهُونَ بِهَا وَهُمْ أَعْيُنٌ لَا يُبْصِرُونَ
 بِهَا وَكُلُّهُمْ آذَانٌ لَا يَسْمَعُونَ بِهَا أُولَئِكَ كَالْأَنْعَامِ
 بَلْ هُمْ أَضَلُّ أُولَئِكَ هُمُ الْغَافِلُونَ ١٤٩ ۞ الاعراف ۷

व.ल.३.६ ञरअना विजलन.म. कसीरम् भिनल्लन्नि
 वल् धन्सि लडुम् कुलूणुल् ला यक्क.डुन. भिडा
 वलडुम् अअयुनुल् ला युप्सिडन. भिडा, व लडुम्
 आठानुल् ला यस्मठिन भिडा, उलाधक.कलअनूअमि
 भल्लुम् अठ.ल्लु, उलाधक.डुमुल्लाडिलून. (१७८)

सू. अअराक् (७)

● और लकतूआलाने दोनों वक्त (सुब्हो शाम) को याद किया और इन दोनों वक्त से मुराद तमाम रात और तमाम दिन है.

● और नीज नकल है के उ.मडेदी ने इर्माया के.....

“अेक वक्त ‘सुल्लानुल्लयल’ है और अेक वक्त सुल्लानुल्लडार’ है. जो शप्स इन दोनों वक्तों को जाये करे वड दीनेभुदा का इकीर नडी”

★★★ पस कलामे भुदा और रसूल और कौले मडेदी से मालुम डुवा के जिके कसीर के भगैर दोठभ से नजात नडी, मानिंद कौलुल्लाडी तूआला के.....

“तुम अल्लाड का बहुत जिक करो शायद के तुम काभ्याभ डो*”

पस जो शप्स के डर अेक नमाज से इरिग डोने के बाद परागंठड न डो और भुदातूआला की जमीन में इरूल न डूंडे (याने बिनाध तलभ न करे) और जिके कसीर में लगा न रहे तेडकीक के वड भुदा के अजाभ से नजात नपाये.

★★★ और नीज नकल है के उ.मडेदी ने पांच पडेर के जिक को जिके कसीर इर्माया है, और जिके कसीर इस तर्तीभ से इर्माया के.....

अवल सुब्ह से डेठ पडेर तक और ओडर के बाद से ईशा के

वक्त तक जुदाकी याद में रहे. ताके उरसे रातदिन ऋये न छें.

- और उ. महेदी ने तीन पहेर के जिक को जिके कलील इर्माया. और जिके कलील को मुनाइकों की सिफत इर्माया.
- यूनांचे अल्लाहतआला ने इर्माया.....

तेहकीक मुनाइकीन अल्लाह से दगाबाज करते हैं और अल्लाह भी उन्को दगा देगा, और जब नमाज पढने उठते हैं तो सुस्त व कालिल डोकर पडे डोते हैं, लोगों को दिखाने की नमाज पढते हैं और अल्लाह को बहुत कम याद करते हैं.

सू. निसाअ (७) आ (१४२)

إِنَّ الْمُنْفِقِينَ يُخَادِعُونَ اللَّهَ وَهُوَ خَادِعُهُمْ وَإِذَا
قَامُوا إِلَى الصَّلَاةِ قَامُوا كُسَالَى يُرَاءُونَ النَّاسَ
وَلَا يَذْكُرُونَ اللَّهَ إِلَّا قَلِيلًا ۝ النساء १४२

- और उ. महेदी ने चार पहेर के जिक को जिके मुश्रीकां इर्माया. यानी चार पहेर जुदा की याद और चार पहेर गैरे जुदा की याद में मशगुल रहेते हैं यानी डक की और शयतान की दोस्ती को मसावी करते हैं. (बराबर)

मानिंदे कौलुल्लाही त्आला

“और लोगों में से बाज वड हैं जो गैरुल्लाह को शरीक ठहेराते हैं और गैरुल्लाह से ऐसी महोब्बत रभते हैं जैसी के अल्लाह से रभना चाहिये और मोमीनों को सबसे ज़्यादा मुहोब्बत जुदा ही से डोती है”.

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَتَّخِذُ مِنْ دُونِ اللَّهِ أَنْدَادًا
يُحِبُّونَهُمْ كَحُبِّ اللَّهِ وَالَّذِينَ آمَنُوا أَشَدُّ حُبًّا
لِلَّهِ ۱۴۵ ○ البقرة ۲

वमिन.न्नासि मैयत्त.भिजु मि-दूनिल्लाहि अ-दादंय्
युहिब्बून.हुम् क.हुब्बिल्लाह, वल्लजीन.आमनू अश.हु
हुब्बल्.लिल्लाही.... सू.भकरह (२) आ. (१६५)

- और "जुस्को कीसी चीज की मुहब्बत ज़यादा होती है तो उसको उसकी याद भी ज़यादा होती है".

मानिंदे कौलुल्लाहीतआला.....

"जब पुदाअे वाहिद का जिक्र किया जाता है तो सप्त हो जाते हैं उन लोगों के दिल जो आपेरत पर ईमान नहीं रखते हैं और जब गैरुल्लाह का जिक्र किया जाता है तो यकायक वह पुश हो जाते हैं".

- भीरां सैयद महेमुद (रज्ज.) ने इर्माया के.....
हजरत महेदी ने ऐसा इर्माया के जिक्रे कसीर करो.
ह.महेदी ने जिक्रे कसीर किस तरतीब से बयान इर्माया.
तो तमाम मुलाज्जरीन अर्ज़ किये के इस तरतीब से के
अव्वल सुबह से उठ पड़ेर तक हुजरे में रहें और दो
शप्स अेक जगह न बैठें, और ज़ोहर के बाद से असर
के वकत तक पुदा की याद में मशगुल रहें. बाद नमाजे
अस्र मगरीब तक बयान सुनें, बाद नमाजे मगरीब ईशां
तक जिक्र करें और अगर कोई शप्स उठ पड़ेर के दरम्यान
अपने हुजरे से बाहर आये तो उसके हुजरे को पारह
पारह करें और उसका हाथ पकडकर दायरे के बाड़ेर कर

हैं. अगर ये ये बंदा हो जैसा ही करें. तमाम यारों ने कुबुल किया.

- पसल मलेदी की लंमेशा ये कोशिश रहती थी के रात दिन लकतूआला की याद में रहें और दो शप्स अक जगल न बैठें और दुन्या के किस्सों बले कुरआन पढने से भी मुत्तदीको मना किया और इर्माया के दिल गाझिल होता है.
- और जानना चाडिये के बेकार बातें बेउद बूरी हैं. वल उर यीज के जो दीन का मकसद और दीन के मुआवेजे की नियत न रખती हो वल सभ झूठल है और जो कौलोझैल के पुदा के लिये है और पुदा के रास्ते पर वल झूठल नहीं है....

.....मानिंदे कौलुल्लाही तूआला के.....

“केड दे के मेरी नमाज और सभ एबादतें और मेरा जना और भरना सभ अल्लाह के लिये है जो सारे जहां का परवरदिगार है कोई उस्का शरीक नहीं और इसी तौहिद का मुजको हुकम हुवा है और मैं सभसे पहेला मुसलमान हूं” (१६४)

सू. अनआम (६).

قُلْ إِنَّ صَلَاتِي وَنُسُكِي وَمَحْيَايَ وَمَمَاتِي لِلَّهِ
رَبِّ الْعَالَمِينَ ۝ لَا شَرِيكَ لَهُ ۚ وَبِذَلِكَ أُمِرْتُ
وَأَنَا أَوَّلُ الْمُسْلِمِينَ ۝ الْإِنشَاء

कुल ईन्नी सलाती वनुसुकी व महाय. व ममाती विल्लाहि रब्बिलआलमीन (१६३) ला शरीक.लहु, वबिजालिक.उम्रितु व अना अव्वलुमुस्लिमीन (१६४) सू. अनआम (६)

- जान लो के बंदे से पुछा की इगर्दानी की अलामत उसका लायअनी कामों में मशगुल होना है. अगर आदमी की उमर अेक साअत ली बेकार कामों में सई हो तो पसारे में आया और उसकी हसरत दराज हूँ मानिंदे कौलुल्लाहीतआला.....

जुमानेकी कसम बेशक ईन्सान पसारे मे हे सिवाये उन लोगों के जो ईमान लाये और नेक अमल करते रहे और अेक दूसरे को हककी तल्कीन और सख्र की तालीम देते रहे.

وَالْعَصْرِ ۝ إِنَّ الْإِنْسَانَ لَفِي خُسْرٍ ۝ إِلَّا الَّذِينَ
 آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَتَوَّصُوا بِالحَقِّ ۝ وَتَوَّصُوا
 بِالصَّبْرِ ۝ العَصْرِ ۱۰۳

वल् अस्ली ईन्ल ईन्सान. लई पुस. ईल्लललीन.आमनु
 व अभीलुस्सालिहाति वतवा सव् बिल्हक्क.वतवा सख्रिस्सख्र
 सू. अस (१०३)

और उसकी उम्र ४० सालसे मुत्जाविज हो और उसकी नेकी उसकी बुराई पर गालिब न होतो उसको याहिये के दोज्ज में जलने के लिये तैयार रहे.

- इमाने पुछा है....

“पस तुम अल्लाह का जिक करते रहो, पडे और बैठे और लेटे, फिर जब तुम मुत्माईन हो जाओ तो नमाज कायम करो बेशक नमाज मोमीनों पर मुकर्रह अवकाल में इर्ज है”.

فَإِذَا قُضِيَتْ الصَّلَاةُ فَادْكُرُوا اللَّهَ قِيَامًا وَقُعُودًا
وَعَلَىٰ جُنُوبِكُمْ فَإِذَا اطْمَأْنَنْتُمْ فَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ إِنَّ
الصَّلَاةَ كَانَتْ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ كِتَابًا مَّوْقُوتًا ۝ النِّسَاءُ

इर्षजा इर्ज़ैतुमुस्सलात. इर्ज़कुल्लाह. क़ियामं व् वकुउिदं व्
वअलाजुनूबिकुम, इर्षजत्मअन-तुम् इ.अकीमुस्सलाह,
ईन्नस्सलात.कान.त् अलल् मुअमिनीन.किताबम् मक्कूता (१०३)
सू. निसाअ (४)

- परस अल्लाह का जिक इर्ज़े दाईम है जो शप्स के इर्ज़े दाईम को अदा न करे उस्से वकतिया इर्ज़ कुबूल न होगा.
- इर्माया नबी (स.अ.) ने.....
“जुस्ने इर्ज़े दाईमी को अदा नहीं किया तो उस्का इर्ज़े मौकुत भी कुबुल न हुआ.”
- अल्लाह का जिक हंमेशा का इर्ज़ है और किसी हालत में साकित न होगा. ईसलिये के किसी शर्त से मश्रूत नहीं. परस ईस जहत से भी मालुम होता है के, “जिकुल्लाह” तमाम इराईज़ में अहम् मतलूब है...
- यूनांये इर्माया अल्लाह त्आला ने.....
“तुम पर जो किताब नाजिल हुई, तुम उस्को पढ दो और नमाज़ को कायम कर. तेइकीके के नमाज़ इइश और बूरी बातों से रोकती है (नाज़ रभती है) और अल्लाह का जिक बहुत बडा है और अल्लाह जानता है, जो कुछ तुम करते हो”.

أَتْلُ مَا أُوْحِيَ إِلَيْكَ مِنَ الْكِتَابِ وَأَقِمِ الصَّلَاةَ إِنَّ الصَّلَاةَ
 تَنْفَعُ عَنِ الْفَحْشَاءِ وَالْمُنْكَرِ وَلَذِكْرُ اللَّهِ أَكْبَرُ وَاللَّهُ
 يَعْلَمُ مَا تَصْعُقُونَ ۝ العنكبوت ٢٩

उत्तु मा उडिय. धलैक.मिनळिताभि व अकिमिस्सुलाह,
 धन्नस्सुलात. तन्हा अनिस्सुलाह वल्लुन्कर, व.व.जिकुल्लाह
 अकबर, वल्लाहु यअल.मु मा तस्नठिन (४५)
 सू. अन्कभूत (२८)

इहशा से यानी बूरे अप्लाक से जो ज्जस्म से
 तआल्लुक रफते हैं, वल्लुन्कर यानी बूरे अप्लाक से जो
 भातीन से तआल्लुक रफते हैं और अलजत्ता अल्लाह
 का जिक तासीर और तजकीये नफ्स के अतबार से
 जयादह बुजुर्ग है, उस नमाज से जो मप्सूस है.

- पस जान औ अज्जु के जिकेदवाम के बगैर 'तजकीयेनफ्स',
 'तजरीद' और 'तफरीद' हासिल न होंगे और दिल से
 'तफरेका' दूर न होगा और 'जमीयत' मयस्सर न होगी,
 और 'शयतानी वसवास' और 'नफ्सानी' मुरादात व
 मतलूभात से बाहिर नहीं आयेगा. पस याहिये के हक
 की यादमें धल्नी मदावमत करे के हर वकत अवकात से
 और हर हाल हालात से हक कीयाद से जाली न रहे.
 प्वाह आनाजाना हो, और प्वाह जाना पीना हो, प्वाह
 सुनना और केहना हो, बल्के तमाम हरकात व सुकनात में
 होशियार रहना याहिये ताके बेकारी में न गुजरे बल्के
 सांस से आगाह रहे के गइलत में न जाये और तालिबे
 मौला (का इर्ज है के) अक साअत हक की याद से जाली
 न रहे.